भारत का कायाकल्प

सुसंगत शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के जरिए भारतीय जनता का सशक्तीकरण

यह पुस्तक निम्नलिखित क्षेत्रों को समर्पित है

1. भारत का युवा वर्ग 35 वर्ष तक की उम्र वाले ..... 850 करोड़
2. एमएसएमई में कार्यरत ..... 460 करोड़
3. 14 से 55 की उम्र के बेरोजगार ..... 300 करोड़

i Watch **12 भाषाओं + अंग्रेजी** में भारत के 28 राज्यों तथा 6 केन्द्रशासित प्रदेशो तक पहुंच रहा है

भारत का कायाकल्प

सुसंगत शिक्षा और **व्यावसायिक प्रशिक्षण**
के जरिए भारतीय जनता का
सशक्तीकरण

कृष्ण खन्ना
द्वारा

समर्थन

भारत में शीतल प्रिन्ट्स, 211, प्रगति इंडस्ट्रियल एस्टेट, डॉ. एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परेल पूर्व, मुंबई–400011 द्वारा मुद्रित

भारत में मैनिफेस्ट पब्लिकेशन्स, 308, ओलम्पस, अल्टामाउन्ट रोड, मुंबई – 400 026 भारत द्वारा प्रकाशित.

कॉपीराइट © कृष्ण खन्ना 2012

भारत में 1993 में पहली बार प्रकाशित

IBN 978–81–906621–0–9

भारत का कायाकल्प को *i Watch* द्वारा 1993 में पहली बार प्रकाशित किया गया और उसके बाद हर वर्ष इसे संशोधित एवं विस्तृत करते हुए वर्तमान संस्करण तक प्रकाशित किया गया है. कृपया इस पुस्तक के पृष्ठ 8 पर इस बारे में विवरण देखें. इस पुस्तक को अन्य 12 भारतीय भाषाओं जैसे कि हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, असमिया, उड़िया, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, मलयालम, कन्नड और तेलुगु में भी प्रकाशित किया गया है.

भारत में शीतल प्रिन्ट्स, 211, प्रगति इंडस्ट्रियल एस्टेट, डॉ. एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परेल पूर्व, मुंबई–400 011 द्वारा मुद्रित

भारत में मैनिफेस्ट पब्लिकेशन्स, 308, ओलम्पस, अल्टामाउन्ट रोड, मुंबई – 400 026 भारत द्वारा प्रकाशित.

स्वत्वाधिकार एवं उद्धरण

इस पुस्तक की संपूर्ण सामग्री यथा विषय – व्याख्या, ग्राफिक लोगो, डाटा (आँकड़ों) का संकलन *i Watch* के साथ–साथ अन्य सूचना प्रदान कर्ताओं की संपत्ति है। इस पुस्तक या इसका कोई भी अंश न तो पुन: प्रस्तुत या नकल किया जाये, न प्रकाशित किया जाए, न परिचालित किया जाए या न ही अवैध तरीके से संशोधित करके लिए जाए। इस पुस्तक का कोई भी अंश बिना *i Watch* की पूर्व अनुमति और लिखित सहमति के किसी भी माध्यम से, वह चाहे मैकेनिकल हो या इलेक्ट्रॉनिक, संचारित नहीं किया जा सकता !

भारत का कायाकल्प

सुसंगत शिक्षा और **व्यावसायिक प्रशिक्षण** के जरिए भारतीय जनता का **सशक्तीकरण**

1. **यह कोई पत्रिका नहीं, बल्कि एक पुस्तक है।** जिसे पढ़ने में आसानी के लिए पत्रिका जैसा रूप दिया गया है। बहुत कम लोग ही 200 पृष्ठों की पुस्तक पढ़ना चाहते हैं।

2. यह पुस्तक तथा यह कार्य **भारत के युवाओं** तथा एमएसएमई में काम करने वाले 46 करोड़ लोगों और उन स्त्रियों तथा पुरुषों के लिए है जो **युवाओं के सशक्तीकरण** के लिए है, खासतौर से जो **स्त्रियों और बालिकाओं** के लिए कार्य कर रहे हैं।

3. इस पुस्तक के मर्म–आशय संदर्भ को समझने और पहचानने के लिए सबसे पहले **पृष्ठ 7** को पढ़ने की ज़रूरत है, क्योंकि इस **प्रयास का सार–तत्व** उसमें दिया गया है।

4. इस पुस्तक के विकास का इतिहास, **पृष्ठ 8**

5. चिरस्मरणीय प्रेरणा, **पृष्ठ 9**

6. एक नागरिक के प्रयास, **पृष्ठ 10**

7. इस पुस्तक का ध्येय, **पृष्ठ–10**

आपसे अनुरोध है कि इस पुस्तक के मुख्य अध्यायों को पढ़ने से पहले पृष्ठ 7, 8, 9 तथा 10 का एक बार अवलोकन कर लें।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम 2
इस पुस्तक के बारे में 4
सतत आर्थिक विकास 7
इस पुस्तक के विकास का इतिहास 8
चिरस्मरणीय प्रेरणा 9
एक नागरिक का प्रयास तथा इस पुस्तक के उद्देश्य 10
हम आपके लिए क्या कर सकते हैं? 11
i Watch के ध्यानाकर्षण क्षेत्र 12
i Watch के बारे में सम्मानित नागरिकों का कहना है 14
i Watch के बारे में 16
सिद्धान्त, मिशन, लक्ष्य 18

खंड 1 शासन

भारत–शायद आप ये बातें न जानते हों 19
भारत का कायाकल्प करने का एजेण्डा 21
आर्थिक एवं बिज़नेस सुधार 23
शासन तथा प्रशासन 24
भारत देश 25
सुशासन भारत का कायाकल्प एक महाशक्ति के रूप में कर सकता है 26
सुशासन + प्रभावी शासन = भ्रष्टाचार का खात्मा 27
विश्वस्तरीय होने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यक है 28
विश्वस्तरीय कुशलता कैसे प्राप्त की जाए? 31
विश्व शासन और विश्व शांती 33

खंड 2 शिक्षा तथा मानव संसाधन विकास

कहानी 3 देशों की– 1947 के बाद 34
शिक्षा का महत्त्व 35
40 से 60 घंटों में कोई भी भारतीय भाषा पढ़ना व लिखना सीखिए 36
व्यावसायिक शिक्षण तथा प्रशिक्षण – वीईटी – विजेता 37
उद्यम कौशल विकास, ईएसडी एवं व्यावसायिक शिक्षा, वीईटी का महत्त्व 39
भारत में 'शिक्षा का लेखाजोखा' 41
भारत को उच्च तथा तकनीकी शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र बनाइए 43
भारत को एक ज्ञानमूलक अर्थव्यवस्था बनना है 44
जनसंख्या विस्फोट ! 47
भारत का विरोधाभास 49
युवा सशक्तीकरण के लिए तीन प्रस्ताव 51
युवा परामर्श – मैं कौन हूं? 52

खंड 3 अर्थव्यवस्था तथा उद्यम

गरीब तथा अमीर के बीच का फ़र्क **56**
वास्तविक तथा अनूठा भारत **57**
गरीबी रेखा तथा संबंधित आंकड़े **58**
विश्व बाज़ारों के लिए योजना कैसे बनाएं? एक चेकलिस्ट! **59**
एमएसएमई हर अर्थव्यवस्था की रीढ़ है? **61**
भारत को अन्तर्राष्ट्रीय धुरी बनना होगा **63**
भारतीय अर्थव्यवस्था का जीडीपी विश्लेषण – एसएमई का महत्त्व **65**
चीन–भारत तुलनात्मक चार्ट – हमसे मुकाबला करोगे? **66**
विश्व, यूएसए, बीआरआईसी चुने हुए देश **67**

खंड 4 रोजगार उत्पत्ति

शिक्षा और कुशलता का महत्त्व **68**
एचआरडी – शिक्षा – रोज़गार तथा बेरोज़गारी **69**
भारत में 'रोज़गार का लेखाजोखा' **70**
छोटे, मझोले उद्यमों के ज़रिए रोज़गार की उत्पत्ति **72**
एमएसएमई की श्रेणियां, यूएस–एसबीए वर्गीकरण **73**
वीईटी के ज़रिए रोज़गार के अवसर **75**
व्यावसायिक शिक्षा व प्रशिक्षण वीईटी पाठ्यक्रमों का वर्गीकरण **76**
रोज़गार के अवसरों के लिए – वीईटी पर अमल **79**
शिक्षा तथा वीईटी क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली परिभाषाएं **82**
चीन में व्यावसायिक प्रशिक्षण, वीईटी तथा अर्थव्यवस्था **83**
जर्मनी (ईयू) में व्यावसायिक प्रशिक्षण, वीईटी तथा अर्थव्यवस्था **84**
अमेरिका में व्यावसायिक प्रशिक्षण, वीईटी तथा अर्थव्यवस्था **85**
भारत में व्यावसायिक प्रशिक्षण, वीईटी तथा अर्थव्यवस्था **86**
भारत की श्रम उत्पादकता **87**
संगत शिक्षा व प्रशिक्षण **88**
कृषि क्षेत्र: भारत की लाभदायक स्थिति **90**

सामान्य

सामान्य जानकारी **91**
संदर्भ **92**
i Watch राष्ट्रीय समितियों में **93**
इस पुस्तक में प्रयुक्त संक्षिप्तियां **94**
i Watch प्रकाशन 13 भाषाओं में उपलब्ध **95**
10% ते 15% प्रति वर्ष की जीडीपी में बढ़ोतरी दर के लिए एक्शन प्लान **96**
i Watch की सन 2014–2015 के लिए योजनाबद्ध परियोजनाएं **97**
प्रायोजक **98**
i Watch की ओर से सीएसआर परियोजनाएं **100**
लेखक के बारे में **101**
सम्मिलित विकास का मंत्र **102**

इस पुस्तक के बारे में

यह प्रस्तुतिकरण भारत के नागरिकों जैसे कि राजनीतिज्ञों, कृषकों, कर्मचारियों, प्रोफेशनलों, अध्यापकों, विद्यार्थियों, अध्येताओं, बिज़नेस करनेवालों, गृहिणियों, इंजीनियरों, डॉक्टरों, वकीलों, सलाहकारों, प्रवासी भारतीयों, विदेश में बसे भारतवंशियों तथा भारत के युवाओं के लाभ हेतु तैयार किया गया है।

यह कोई पत्रिका नहीं बल्कि **एक पुस्तक है !** इसे आसान तथा दोस्ताना शैली में लिखा गया है ताकि सुविधाजनक ढंग से पढ़ा जा सके ! ज़्यादातर लेख एक या दो पृष्ठों के हैं। कुछ ही लेख तीन पृष्ठों के हैं।

जहां कहीं अपेक्षित था, पाठ के साथ आसान रेखाचित्र दिए गये हैं तथा अनावश्यक पाठ को यथा संभव काटा गया है।

इस पुस्तक की सामग्री को चार खंडों में बांटा गया है ! प्रत्येक पृष्ठ के अंत में लेख के प्रकार को वर्गीकृत किया गया है। इनके विषयों में अंतर्सम्बन्धों को यथा आवश्यक रेखांकित किया गया है।

खंड 1 में **शासन** से संबंधित लेख हैं।

खंड 2 में **शिक्षा तथा मानव संसाधन विकास** से संबंधित लेख हैं।

खंड 3 में **अर्थव्यवस्था तथा उद्यमिता** से संबंधित चुनिदा क्षेत्रों पर लेख हैं।

खंड 4 में **रोज़गार उत्पत्ति** से संबंधित लेख हैं।

यह पुस्तक ऐसे हर व्यक्ति के लिए है, जिसने 8वीं कक्षा तक या उससे ज़्यादा पढ़ाई की हो।

चूंकि भारत की मुश्किल से 7% जनता अंग्रेजी जानती है अत: इस पुस्तक को समस्त प्रमुख भारतीय भाषाओं जैसे कि मराठी, गुजराती, उर्दू, हिन्दी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम, उड़िया, बंगला, असमिया तथा पंजाबी में भी उपलब्ध कराया गया है।

यहां दी गई जानकारी में, यथासंभव नवीनतम आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है।

पाठकों से अनुरोध है कि वे इन पृष्ठों में निहित सामग्री को भारत की जनता के विचारों तथा कार्यों को संघटित करने की भावना से ही दृष्टिगत रखें, जो कि इसे लिखे जाने के पीछे की मूल भावना है। यह कोई उपदेशात्मक भाषण नहीं है, बल्कि तथ्यपरक विवरण है। इसका एकमात्र उद्देश्य **भारत की जनता के लाभ के लिए** जन–जागरूकता तथा कार्यशीलता को और बढ़ाना ही है।

प्रत्येक टिप्पणी अपने आप में अलग है। किसी को भी, किसी भी समय पढ़ा जा सकता है।

अगर आप मुझसे उन पांच महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों के नाम पूछें, जिनमें भारत की जनता के हित में सबसे ज़्यादा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है तो मैं कहूंगा, वे हैं – शिक्षा, शिक्षा, शिक्षा, शासन तथा प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल।

प्रथम 'शिक्षा' से आशय, प्रयोजन मूलक साक्षरता तथा प्राथमिक/माध्यमिक (सेकन्डरी) शिक्षा से है। संसद में 'शिक्षा का अधिकार' कानून सन 2005 में ही पेश किया गया है। जो सन 2009 में पारित हुआ। ईश्वर को लाखों धन्यवाद देना चाहिए कि कम से कम स्वतंत्रता के 63 वर्षों बाद हमने ''शिक्षा'' के महत्त्व को तो पहचाना।

द्वितीय 'शिक्षा' से आशय व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण (वीईटी) से है। वीईटी के महत्त्व को अंतत: प्रधानमंत्री स्तर पर स्वीकार किया गया है जिन्होंने युवा भारतीयों को सशक्तीकरण तथा प्रशिक्षण के ज़रिए फलदायी रोजगार दिलाने के लिए एक रूपरेखा तैयार करने के लिए नवंबर 2006 में एक कार्यदल का गठन करने का निर्देश दिया है।

सन 2009 में, 11वीं योजना में, **राष्ट्रीय कौशल परिषद** तथा **राष्ट्रीय कुशलता विकास निगम** की स्थापना की परिकल्पना की गई है। भारत सरकार ने 11वीं पंचवर्षीय योजना में 1500 आईटीआई/आईटीसी और 50,000 अतिरिक्त कुशलता केन्द्रों की स्थापना की योजना बनाई है। वर्तमान 5,500 आईटीआई केन्द्रों के आधुनिकीकरण का कार्य भी पूरे जोर–शोर से चालू है।

तृतीय 'शिक्षा' से अभिप्राय सभी प्रकार की मेडिकल, उच्च तथा तकनीकी शिक्षा से पूरी तरह से नियंत्रण समाप्त करना तथा उन्हें विनियमित करना है। केवल इसी कदम के ज़रिए अभिनवता तथा उत्कृष्टता हासिल की जा सकती है।

पहले स्टील, सीमेन्ट, कार, स्कूटर आदि में आरक्षण था। केवल क्षमता बढ़ाने तथा मार्केट्स को मुक्त करने में कीमतों, क्वॉलिटी और उपलब्धता के मुद्दों को सुलझाया है। शिक्षा के सभी क्षेत्रों के खास तौर पर उच्चतर शिक्षा मेडिकल और तकनीकी शिक्षा से **''लाइसेंस राज''** का हटाया जाना अनिवार्य है।

शिक्षा एक ऐसा उद्यम है जो सूचना प्रौद्योगिकी तथा सॉफ्टवेयर से तकरीबन पाँच गुना बड़ा है। इसलिए इसमें सॉफ्टवेयर तथा सूचना प्रौद्योगिकी से कहीं ज़्यादा रोज़गार उत्पादन की क्षमता है।

पाठक को **प्राथमिक स्वास्थ्य देखमाल** के क्षेत्र में आंकड़ों तथा समाधानों के लिए कहीं और ध्यान देना होगा।

सुशासन को रेखांकित करने के लिए कुशासन तथा उसके कुप्रभावों के कई उदाहरण पेश किए गये हैं। प्रजातंत्र में सुशासन को पाना तब तक मुश्किल होगा, जब तक कि जन प्रतिनिधि संबंधित शिक्षा की शक्ति से सम्पन्न नहीं होंगे।

लघु तथा छोटे मध्यम उद्यमों **(एमएसएमई)** की वास्तविक क्षमता को पहचानने में हमारे देश को आजादी के बाद **59** वर्ष का समय लगा है तथा इस विषय पर काफी चर्चा और बहस करनी पड़ी है। एमएसएमई पर विधेयक सिर्फ़ 2006 में ही पारित हो सका है। हमारी जीडीपी का संभवत: 80% यहां है।

भारत समेत, इस दुनिया के 99.7% संगठन, एमएसएमई हैं। ये किसी भी राष्ट्र की 'रफ्तार' तथा 'धड़कन' होते हैं। 490 मिलियन की श्रमशक्ति का केवल 6% 'संगठित क्षेत्र' है तथा शेष 460 मिलियन या 94% 'असंगठित क्षेत्र' है। अनुमान के अनुसार, लघु तथा छोटे मध्यम उद्यमों की कुल संख्या 100 मिलियन है। जिसमें 80% कृषि तथा रोपाई उद्यमों की है, जबकि सेवा और निर्माण सेक्टरों में 20% है।

रोज़गार उत्पत्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण वीईटी तथा एमएसएमई के महत्त्व को रेखांकित तथा स्पष्ट किया गया है। नवीनतम सीआईआई –बीसीजी – प्रोफे. सी. के. प्रहलाद परियोजना **भारत @ 75** के अनुसार, सन 2022 तक, राष्ट्र को 500 मिलियन विश्वस्तरीय कुशल लोग और 200 मिलियन विश्व स्तरीय स्नातकों की आवश्यकता होगी।

इस पुस्तक के विकास का इतिहास नाटकीय रहा है, अधिक जानकारी के लिए कृपया पृष्ठ संख्या **8** देखें।

केवल परिवर्तन ही स्थिर चीज है। पाठकगण यह तो आपको फैसला करना होगा कि यह परिवर्तन बेहतरी के लिए था या बदतरी के लिए।

कृष्ण खन्ना
मुंबई, भारत
अप्रैल 2014

अस्वीकरण

इस पुस्तिका में दी गई सूचना भारत तथा भारत से बाहर के तमाम स्रोतों से विगत 20 वर्षों में इकट्ठी की गई है।
उपलब्ध करवाए गए आंकड़ों के बारे में *i Watch* किसी भी प्रकार की कानूनी जिम्मेदारी नहीं लेती है।
हम यह सिफारिश नहीं करते कि इस पुस्तिका में उपलब्ध करवाए गए आंकड़ों के आधार पर निवेश किए जाएं या बिज़नेस संबंधी निर्णय लिए जाएं।
जानकारी के ज़्यादातर स्रोतों के बारे में पृष्ठ 92 पर संदर्भ दिए गये हैं।
नवीनतम आंकड़ों तथा जानकारी के लिए पाठकों को सलाह दी जाती है कि मौजूदा वेबसाइट्स तथा हैंडबुक्स देखें, जिनका उल्लेख पृष्ठ 92 पर किया गया है।

भारत के माननीय नागरिकगण
पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों

सम्मिलित विकास का मंत्र : मानव सम्पदा *पर ध्यान केन्द्रित कीजिए*

प्रिय मित्रो,

हम एक परिवार वित्त पोषित 21 वर्षीय एनजीओ हैं तथा सुशासन, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और रोजगार के क्षेत्र में कार्यरत हैं। मेरी पुस्तक – **भारत का कायाकल्प** को हमारी वेबसाइट www.wakeupcall.org से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। मुझे 6 वर्ष जर्मनी और जापान में काम करने का सौभाग्य मिला है; ये दोनों देश द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तबाह हो गए थे, उसके बावजूद ये दुनिया में दूसरी तथा तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने में कामयाब हुए, जबकि इनके पास कोयला, तेल या गैस के रूप में ऊर्जा या खनिज पदार्थों के कोई भंडार नहीं हैं. आकार में ये भारत के केवल 12% जितने बड़े हैं। **मगर इनके पास ऊंचे दर्जे की मानव सम्पदा है!** यही इनकी सफलता का रहस्य है। यही बात एशियन टाइगर्स जैसे कि चीन, दक्षिण कोरिया, तायवान, हाँगकाँग, सिंगापुर, मलेशिया और जापान के साथ है।

मैं 31 वर्षों के अपने व्यावसायिक अनुभव और 20 वर्षों के सामाजिक क्षेत्र के साथ संबंध के आधार पर विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि पिछली सरकारों ने काफी कुछ किया है, लेकिन निम्नलिखित मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करके और भी बहुत कुछ किया जा सकता है:–

1. **केन्द्र सरकार की सभी वेबसाइट्स को मुख्य 12 भारतीय भाषाओं में रूपान्तरित करना।** भारत का क्षेत्रीय मीडिया, अंग्रेजी मीडिया से 20 गुना बड़ा है अत: ऐसा किए जाने पर ज़्यादा लोग इसे समझ तथा सरकार के साथ काम कर सकेंगे (केवल 6% भारतीय अंग्रेजी समझते हैं। हमारा एनजीओ 12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होता है) आईएनएस, इंडियन न्यूजपेपर सोसायटी हैंडबुक, रफी मार्ग, नई दिल्ली से आपको इस बारे में अधिक जानकारी मिल सकती है। और तो और, गूगल, ओराकल तथा माइक्रोसॉफ्ट भी 9 से 15 भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल करते हैं। भारतीय संविधान 22 भाषाओं को समर्थन देता है।

2. **प्राथमिक–पूर्व, प्राथमिक और सेकेण्ड्री शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना।** आजादी के 65 सालों के बाद भी तकरीबन 65% भारतीय अनपढ़ है (यह हमारा आकलन है, कृपया यूएनडीपी से भी इसकी जांच–पड़ताल कर लें). अगर लोग पढ़ना–लिखना भी नहीं जानते तो गरीबी को कम करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मनुष्य के मस्तिष्क का 90% विकास 6 से 7 वर्ष की उम्र में हो जाता है, इसलिए प्राइमरी–पूर्व शिक्षा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

3. **उद्यमशीलता कौशल विकास पर ध्यान केन्द्रित करना।** इयू में इसकी शुरूआत कक्षा 1 से हो जाती है। भारत में हमें इसे कम से कम कक्षा 8 या हायर सेकेण्ड्री से करना चाहिए। आप चाहे स्व–रोजगार में हों या दूसरों के लिए काम करते हों, इस गुण का होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। **तकरीबन 58% भारतीय स्व–रोजगार में हैं। उद्यमशीलता कौशल का विकास सीखने वालों के एसक्यू और ईक्यू को सुधारता है।**

4. **कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा रोजगार पैदा करने वाले प्रोजेक्ट्स पर ध्यान केन्द्रित करना1** भारत में (आबादी 121 करोड़) 9,500 वीईटी (व्यावसायिक शिक्षा व प्रशिक्षण) केन्द्र हैं। स्विटजरलैंड (आबादी 80 लाख) में 6,000 हैं. जर्मनी (आबादी 82 लाख) में 100,000 हैं। जापान (आबादी 12.9 करोड़) में 150,000 हैं. चीन (आबादी135 करोड़) में 500,000 हैं। सन 1835 में लॉर्ड मैकाले द्वारा भारत में सभी गुरूकुल **केन्द्रों** को बंद किए जाने से हमारे पास व्यावसायिकता विकास की संरचनाओं की भारी कमी है। **वीईटी से एसक्यू और ईक्यू में सुधार आता है.**

5. नेशनल **नॉलेज कमीशन के सैम पित्रोदा की सिफारिशों पर अमल कीजिए।** एनकेसी ने भारत में **उच्च, तकनीकी, चिकित्सा तथा कृषि** शिक्षा के सभी स्वरूपों के बारे में बहुत ही उपयोगी सुझाव दिए हैं। इन पर जल्द से जल्द अमल किया जाना चाहिए। आज भारत के किसी भी विश्वविद्यालय या कॉलेज की गिनती दुनिया के श्रेष्ठ 250 में नहीं होती है। हम जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं, उससे अगले 10 वर्षों में भी दुनिया के श्रेष्ठ 500 विश्वविद्यालयों में हमारे स्थान पाने की कोई संभावना नहीं है। **केवल प्रतिस्पर्धा और मुक्त मार्केट्स ही शैक्षणिक संस्थानों को नई पहल, शोध कार्य करने तथा अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के अनुसार सुधार लाने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।** आज ज्ञान की देवि सरस्वती जंजीरों में जकड़ी है, उसे आजाद कराया जाना चाहिए।

6. *i Watch* **द्वारा शिक्षा की तकनीकों, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उद्यमशीलता कौशल के लिए दिए गए समाधान।** हमारे पास स्कूली शिक्षा के लिए ऊंची टेक्नोलॉजी पर आधारित तथा भारत में विकसित कम लागत वाली टेक्नोलॉजियां हैं **(प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष रू.100 की दर से)** जो कि शिक्षा और प्रशिक्षण के सभी स्वरूपों के लिए परस्पर प्रभावी पत्राचार माध्यम की शिक्षा पर आधारित है (वन–टू–वन मेंटरिंग के साथ **रू. 2 प्रति घंटा**)। हमारे पास **उद्यमशीलता कौशल विकास** और **व्यावसायिक प्रशिक्षण** हेतु समाधान हैं। अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ 100 पर हमारा सीएसआर नोट देखें।

सुसंगत शिक्षा व व्यावसायिक प्रशिक्षण के द्वारा आर्थिक विकास को कायम रखना

जहां तक भारत देश का संदर्भ है, ऊपर दिये गये मुद्दों पर निरंतर कार्य करना ही होगा।

नीचे दो उदाहरण दिये गये हैं। उनसे **मानव संसाधन विकास, सम्बन्धित शिक्षा** और **कौशल** का महत्त्व प्रदर्शित होता है, जिनको अर्थव्यवस्था विकास को कायम रखने के लिए दिये जाने वाले व्यावसायिक प्रशिक्षण की मार्फत ही हासिल कर सकते हैं।

दक्षिण कोरिया, शिक्षा मंत्रालय द्वारा मुझे अक्तूबर–2007 में ''विकासशील देशों के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण' (वीईटी) के व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया गया था।

यह ग्लोबल एचआर फोरम का ही एक अंग था जिसमें 50 देशों से लगभग 1,200 शिक्षा शास्त्रियों ने भाग लिया था। इस फोरम में आमंत्रित एकमात्र दूसरे भारतीय आईआईटी–मद्रास के डायरेक्टर प्रोफे. अनंत जी थे।

ग्लोबल फोरम का उद्घाटन दक्षिणी कोरिया उप प्रधानमंत्री महोदय किया था। आज से 50 साल पहले, दक्षिण कोरिया के लोग भी भारतीयों के समान ही गरीब थे।

दक्षिण कोरिया कच्ची धातु, कोयला या गैस, ऑइल, अन्य हाइड्रो कार्बन के रूप में ऊर्जा के लिए जापान और जर्मनी का मुँह ताक रहा था। फिर भी, 2रे विश्व युद्ध की विनाश की संपूर्ण विभीषिका के बावजूद दक्षिण कोरिया तेजी से विकास कर रहा था। जबकि भारत देश के मामले में ऐसा नहीं था।

दक्षिण कोरिया ने इस सच्चाई को जान लिया था कि **व्यावसायिक प्रशिक्षण के जरिए शिक्षा और कौशल** निर्माण से ही तरक्की मिल सकेगी

दक्षिण कोरिया ने उप प्रधानमंत्री का भी एक पद बनाया जिसकी **मुख्य जिम्मेदारी,** मेरा विश्वास है, मानव संसाधन विकास, शिक्षा और कौशल निर्माण का काम था।

आज 50 वर्षों के उपरांत, एक औसत दक्षिण कोरियाई व्यक्ति की आय लगभग 23,823 यूएस डॉलर प्रतिवर्ष की है, जबकि तुलना में एक भारतीय व्यक्ति की औसत आय 1,530 यूएस डॉलर है।

क्या यह सच्चाई हम भारतीयों के लिए एक संदेश नहीं है? आइये ! हम दूसरा उदाहरण भी देखें, जो वर्तमान का है।

एक राष्ट्र के रूप में सन 2022 तक हम कहाँ होंगे? या 75वें स्वतंत्रता दिवस या **भारत @ 75 ?** पर हम कहाँ होंगे? भारतीय उद्योग संघटन या **सीआईआई** ने विश्व विख्यात प्रबंधन गुरू **प्रो. सी. के. प्रहलाद** के साथ मिलकर **भारत @ 75** नामक योजना बनाई है ! सीआईआई की 74 राष्ट्रीय समितियों में से एक समिति, **शिक्षा, कौशल** व **एचआर** और **युवा** इस मुद्दे पर प्राथमिक रूप से कार्य कर रही हैं।

प्रो. प्रहलाद इस बारे में बेहद स्पष्ट मत के हैं। उनकी राय है कि केवल **लोगों के सशक्तीकरण** द्वारा ही, खास तौर पर शिक्षा और कौशल निर्माण तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के जरिए ही और वह भी भारत के युवाओं को प्रशिक्षित करके ही सन 2022 तक हम एक राष्ट्र के रूप में अपने प्रमुख उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकेंगे !

योजना के अनुसार, विभिन्न कौशल क्षेत्रों में सन 2022 तक 500 मिलियन कुशलता प्राप्त लोग और 200 मिलियन विश्वस्तरीय स्नातक होने ही चाहिए।

भारत में शिक्षा, अर्थव्यवस्था, सुशासन और रोज़गार उत्पत्ति पर अधिक जानकारी www.wakeupcall.org पर उपलब्ध है या फिर, संबंधित शिक्षा व व्यावसायिक प्रशिक्षण की मार्फत भारतीय जनता के सशक्तीकरण द्वारा **'भारत का कायाकल्प'** नामक पुस्तक में मिल जाएगी।

इस पुस्तक के विकास का इतिहास

सन 1993 में हमने 4 पृष्ठों की एक पुस्तिका से शुरुआत की थी।

सन 1997 में इसके पृष्ठों की संख्या बढ़ाकर 8 की गयी तथा इसे 10 भारतीय भाषाओं में अनुवादित भी किया गया।

सन 1999 में इस पुस्तिका को16 पृष्ठों, 2001 में 24 पृष्ठों, 2002 में 28 पृष्ठों, 2004 में 32 पृष्ठों, 2005 में 36 पृष्ठों, 2006 में 48 पृष्ठों तथा जनवरी 2007 में 56 पृष्ठों की पुस्तिका की गई।

जुलाई 2008 में इसके पृष्ठों की संख्या को बढ़ाकर 88 किया गया और जनवरी, 2009 में इसे 92 पृष्ठों तक बढ़ाया गया। और अक्तूबर, 2009 में 96 पृष्ठों की पुस्तिका हो गई।

फरवरी 2011 में संस्करण 100 पृष्ठों का था।

फरवरी 2012 संस्करण को बढ़ाकर 102 पृष्ठों का किया गया, जबकि वर्तमान अप्रैल 2014 संस्करण 104 पृष्ठों का है।

'भारत का कायाकल्प' नामक यह पुस्तक अंग्रेजी में उपलब्ध है और उसके अतिरिक्त 12 भारतीय भाषाओं अर्थात असमिया, बंगला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु तथा उर्दू में उपलब्ध है।

हमारा केन्द्रित ध्यान हमेशा इन चार क्षेत्रों में रहा है:

1 **शासन** ..... *India 1st*

2 **शिक्षण तथा मानव संसाधन विकास** ..... *Education 1st*

3 **अर्थव्यवस्था तथा उद्यमिता** ..... *Economy 1st*

4 **रोजगार उत्पत्ति** ..... *Employment 1st*

i Watch के चार खंड हैं, जिनके नाम हैं *India 1st*, *Education 1st*, *Economy 1st* और *Employment 1st*, पहले तीन विषयों में प्रत्येक दस, बारह और नौ लेख हैं, जबकि चौथे में सोलह लेख हैं। कुल सैंतालीस टिप्पणियां तथा अवलोकन हैं।

पाठक के मार्गदर्शन के लिए प्रत्येक पृष्ठ के अंत में, पाठ की उपरोक्त चार श्रेणियों में से एक में प्रत्येक का वर्गीकरण किया गया है।

और जो लेख उपरोक्त में से किसी श्रेणी में नहीं आते हैं, उनका वर्गीकरण **'सामान्य'** श्रेणी के अंतर्गत किया गया है।

चिरस्मरणीय प्रेरणा

नोबल पुरस्कार प्राप्त कवि – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

भारत एक ऐसा देश बन सकता है, जिसे ठीक प्रकार से रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में ही वर्णित किया जा मसकता है।

जहां न मन में भय कोई हो, गर्वोन्नत हों भाल सभी के;

जहां ज्ञान की धारा हो अविरल बहती;

जहां न मन में हों तेरे–मेरे के भेदों से खंडित भाव किसी के;
जहां न दीवारों की कारा हो वैमनस्य को कहती;

जहां शब्द सत्य के डंके की तालों पर हों थिरकते;

जहां अथक प्रयासों की बाहों में खुशियां दम–दम, दम–दम, दमकें;

जहां बुद्धि से देखे सपने–अपने होकर चमकें;
जहां बह के कहीं रेत बगूलों की, आंधी में खो जाएं;

जहां खुले बन ज्योति रजत पट वैचारिकता की राहें;

जहां मुक्ति का भाव घुला हो, हे प्रभु मेरे जन गण में ऐसा भाव जगा दें।

गीतांजलि, पद्य xxxv

एक नागरिक का प्रयास

एक नागरिक, आईआईटी के इंजीनियर की ओर से यह संगत शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से **भारत के कायाकल्प** की शुरुआत तथा उसे गति प्रदान करने की और ठोस नींव तैयार करने की एक कोशिश है।

हम सभी का एक कर्तव्य है, कुछ लोग इसे महसूस करते हैं और कुछ लोग नहीं।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमें क्या करना है इस बात पर हमारी स्पष्ट दृष्टि हो।

फिर सब कुछ आसान हो जाएगा।.....

यह राजनीति, धर्म तथा क्षेत्रवाद के बंधनों से मुक्त प्रयास है जिसका उद्देश्य बस लोगों में जागरूकता पैदा करना है, और फिर ये स्वयं भी भारतीयों की छिपी क्षमताओं को समझ और पहचान सकते हैं; हमारा ध्येय है लोगों को बताना कि हमने क्या खोया है और हमारे इस कार्य का क्या महत्त्व है।

हमारी आम सोच से कहीं ज़्यादा विशाल है हमारा भारत।

यह कार्य तो मात्र बीजारोपण है; इसके विकास के लिए उन सभी के हाथों की आवश्यकता होगी, जिसमें से एक आपका भी है।

इस पुस्तक का उद्देश्य

देश के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती 100% कार्यमूलक साक्षरता, व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण के रूप में सार्थक शिक्षा प्रदान करना है तथा मौज़ूदा संरचना को उच्चतर, चिकित्सा एवं तकनीकी शिक्षा के समस्त रूपों में बहुआयामी विस्तार देना है, जैसा कि पहले कभी यह हुआ करता था।

भारत को शीघ्र से शीघ्र अपनी युवाशक्ति को सार्थक शिक्षा एवं प्रशिक्षण से शक्ति सम्पन्न करना है।

एक भारतीय की औसत उम्र **26** वर्ष है।

हमारी नंबर एक प्राथमिकता है **शिक्षा तथा बालिका एवं स्त्री जीवन का सशक्तीकरण।**

हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?

प्रिय पाठकगण, हम निम्नलिखित क्षेत्रों में आपकी मदद कर सकते हैं:

1. प्रकाशन

इस पुस्तक के अलावा, हमारे अन्य **प्रकाशनों की सूची** पृष्ठ 95 पर दी गई है। कृपया नोट करें कि 104 पृष्ठों की यह पुस्तक **12 भारतीय भाषाओं** में भी उपलब्ध है जैसे कि हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, असमिया, बंगला, उड़िया, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड तथा मलयालम। केवल 7% भारतीय जनता ही अंग्रेजी समझ पाती है।

2. चर्चाशील कार्यशालाएं

हम निम्नलिखित विषयों पर चर्चाशील कार्यशालाएं आयोजित करते हैं जिनका विवरण पृष्ठ 91 पर दिया गया है। 'भारत के लिए संगत **निर्माण की नीति**', 'भारत के लिए संगत **शिक्षा नीति**', **वैश्वीकरण** तथा 'भारत किस प्रकार +10% प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि कर सकता है।' '**सुशासन** तथा यह किस प्रकार नागरिकों को लाभ पहुंचाता है', 'प्रतिवर्ष 10 मिलियन **नए रोज़गार अवसर पैदा करना**' कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद धनोपार्जन कैसे करें, शिक्षा के माध्यम से **भारत का कायाकल्प।**

3. अध्यापकों, अभिभावकों और युवाओं की सोच का बदलना

अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ 97 पर दिए गए प्रोजेक्ट्स 1 तथा 2 देखने की कृपा करें। यहां प्रोजेक्ट्स की जानकारी देने के साथ–साथ उनके सकारात्मक प्रभावों की भी विस्तृत जानकारी दी गई है।

4. संगत आंकड़े उपलब्ध कराना

कृपया हमारी वेबसाइट www.wakeupcall.org देखें। हमारे सभी प्रकाशनों की जानकारी मद 1 के अंतर्गत दी गई है, संदर्भों की विस्तृत जानकारी पृष्ठ 92 पर है तथा आप देखेंगे कि हमने ढेर सारी जानकारी समझने में आसान भाषा में उपलब्ध करायी है। सभी आंकड़ों को वर्ष में एक बार यथासंभव अद्यतन किया जाता है।

5. व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करना

हम भारत में कुछ बड़े संगठनों के साथ काम करते हुए प्रति वर्ष सम्मिलित रूप से अनेक लोगों को प्रशिक्षित करते हैं। हम उनके **नॉलेज पार्टनर हैं।** टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल, वास्तविक प्रशिक्षण केन्द्रों के इस्तेमाल, प्रत्येक स्थानीय क्षेत्र में ऐसे प्रशिक्षण केन्द्रों को बिज़नेस तथा उद्योग के साथ एकीकृत करते हुए, वास्तविक प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों के आकलन, परीक्षा तथा प्रमाणीकरण, प्रशिक्षण के पूर्व काउन्सलिंग प्रदान करते हुए और प्रशिक्षण के बाद नौकरी दिलाकर हम भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों तथा जिलों के युवाओं में मूल्यमान भरते हैं। इस समय हम कृषि, उत्पादन, सेवाओं के क्षेत्र में वीईटी पाठ्यक्रमों पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं तथा भारत के सभी हिस्सों में केन्द्र स्थापित कर रहे हैं। विस्तृत जानकारी अनुरोध पर उपलब्ध है।

i Watch के ध्यानाकर्षण क्षेत्र

शिक्षा

हमने इस मुद्दे पर कार्य इसलिए किया क्योंकि...

1. 87% से 93% बच्चे किंडरगार्टन से 10+2 के बीच पढ़ाई छोड़ देते हैं, इनमें कभी स्कूल न जाने वाले बच्चे भी शामिल हैं।
2. उच्च, मेडिकल तथा तकनीकी शिक्षा में 'लाइसेंस राज' तथा नियंत्रण में वृद्धि, अनुसंधान तथा विकास, गुणवत्ता और क्षमता को बाधित किया है।
3. भारत में पर्याप्त सीटें तथा स्तरीय शिक्षा न होने के कारण भारतीय विद्यार्थियों के उच्च शिक्षा के लिए विदेश चले जाने से हर साल करीब रु.50,000 करोड़ या 10 से 12 बिलियन यूएस डॉलर विदेश चला जाता है। इस धनराशि से हर साल 50 आईआईएम और 30 आईआईटी बन सकते हैं। अनुमान है कि हर 153,000 विद्यार्थी शिक्षा हेतु विदेश को रूख कर जाते हैं। 50% दो वर्षीय मास्टर्स कोर्स चुनते हैं जबकि शेष 50% चार–वर्षीय अंडर ग्रेजुएट कोर्स अपनाते हैं।
4. प्रयोजनमूलक साक्षरता के करीब 33% होने का अनुमान है, जबकि सरकारी आंकड़े करीब 67% है, दूसरी तरफ चीन 93% के आसपास है।
5. प्रतिभाओं का अपर्याप्त विकास। संगठित क्षेत्र में किसी भी समय मुश्किल से 0.5% श्रमशक्ति प्रशिक्षित होती है, इसके विपरीत अपेक्षित प्रतिशत 7% से 10% है, जो कि चीन तथा अन्य विकसित देशों में है।
6. भारत में 27,000 विदेशी विद्यार्थी आते हैं, जबकि आस्ट्रेलिया में 400,000 विदेशी विद्यार्थी आते हैं।
7. भारत में 1.7 मिलियन स्कूल हैं, जबकि चीन में 2.5 मिलियन स्कूल हैं।
8. भारत में 563 विश्वविद्यालय हैं, जबकि चीन में 1100 हैं।
9. प्री–प्राइमरी को महत्त्व नहीं दिया जाता जबकि मानव मस्तिष्क के 90% का विकास 1 से 6 वर्ष की उम्र में हो जाता है।

शासन

हमने इस मुद्दे पर कार्य इसलिए किया क्योंकि...

1. भारत के 35 राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों द्वारा देश को चलाने के लिए रोज़ाना रु. 3,600 करोड़ या 0.72 बिलियन यूएस डॉलर खर्च किए जाते हैं। क्या जनता इससे प्रसन्न है ?
2. भारत में एफडीआई स्टॉक मुश्किल से 121 बिलियन यूएस रहा जबकि चीन + हाँगकाँग के लिए यह 1920 बिलियन यूएस डॉलर है।
3. भारत में हर साल केवल 6 मिलियन पर्यटक आते हैं। जबकि चीन में हर 80 मिलियन पर्यटक आते हैं।
4. विश्व व्यापार में हमारी हिस्सेदारी करीब 2.2% है जबकि चीन की 8.0% है।
5. भारत का प्रति एकड़ कृषि उत्पादन चीन की तुलना में 40% है।
6. यहां औसत जीवन का 67 वर्ष है, जबकि चीन में 74 वर्ष हैं।
7. भारत में इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड्स को ट्रांसमिशन तथा अन्य हानियों से 25% से 50% की हानि होती है जबकि चीन में यह 6% से 8%।
8. भारत का विदेशी मुद्रा आरक्षण करीब 295 बिलियन यूएस डॉलर है जबकि चीन का 2199 बिलियन यूएस डॉलर है।
9. भारत में एचआईवी/एड्स ने करीब 5 मिलियन लोगों को प्रभावित किया है, जबकि चीन में यह संख्या 0.85 मिलियन है।
10. भारत में खराब फार्म प्रबंधक से फलों तथा तरकारियों का करीब 40% क्षतिग्रस्त या नष्ट हो जाता है।
11. भारत में काफी वर्षा होती है, लेकिन घटिया दर्जे के जल प्रबंधन के कारण हमें बाढ़ या सूखे का सामना करना पड़ता है।

अर्थव्यवस्था

हम इस मुद्दे पर इसलिए कार्य कर रहे हैं क्योंकि...

1. श्रम संबंधी कानून भारतीय संगठनों को वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था में समान स्तर पर आगे बढ़ने का मौका नहीं देते हैं।
2. रोज़गार उत्पत्ति को इसलिए भुगतना पड़ता है, क्योंकि हम श्रम को प्रोत्साहन देने के बजाए पूंजी को प्रोत्साहन देने वाले व्यवसायों की ओर देखते हैं।
3. भारत के पास विश्व जीडीपी का केवल 2.6 % है। क्रय शक्ति कम है। लेकिन 17% की ऊंची आबादी के कारण मांग ज़्यादा है। इसका उत्तर है निर्यात। 66 वर्षों में इस पर पर्याप्त जोर नहीं दिया गया है। एसईज़ेड का तेजी से विकास किया जाना ज़रूरी है।

<1 बिलियन = 1000 मिलियन> <1 मिलियन = 10 लाख> <1 करोड़ = 100 लाख = 10 मिलियन> <1 यूएस $ = रु. 60 (लगभग)>

4. हमारी बुनियादी संरचना 1,210 मिलियन की जनसंख्या के लिए बिल्कुल अपर्याप्त है। बातें तो बहुत होती हैं, मगर अमल के नाम पर कुछ नहीं होता।

5. भारत को अपने विश्व व्यापार के लिए क्रय शक्ति समानता यानी पर्चेज़िंग पावर पैरिटी (पीपीपी) का लाभ उठाने की आवश्यकता है।

6. सूचना प्रौद्योगिकी तथा सॉफ्टवेयर भारतीय अर्थव्यवस्था का केवल 5% तथा विश्व अर्थव्यवस्था का 3% हिस्सा है। भारत को विश्व अर्थव्यवस्था के शेष 97% पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

7. मध्यम व छोटे मध्यम उद्योग के फायदे को पूरी तरह से नहीं समझा गया है। इसकी मौज़ूदा व्याख्या विश्व मानदंडों के अनुसार नहीं है, जैसे कि ईयू, यूएसए, जापान, चीन आदि देशों में हैं! यह भारतीय व्यवसाय के लिए एक बड़े नुकसान की बात है क्योंकि दुनिया में 99.7% संगठन छोटे मध्यम उद्योग में आते हैं। लघु उद्योग भारत की जीडीपी का केवल 5% है, जबकि छोटे मध्यम उद्योग 70% से 80% के आसपास होने चाहिए। उद्योग मंत्रालय को उद्योग के बजाए अर्थव्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

रोज़गार उत्पत्ति

हमने इस मुद्दे पर इसलिए ध्यान केन्द्रित किया है क्योंकि...

1. भारत में 43 मिलियन रजिस्टर्ड बेरोज़गार हैं तथा करीब और 18 से 50 वर्ष की उम्र के 260 मिलियन लोग ऐसे हैं जो योग्यता से निचले स्तर पर रोज़गार में हैं या फिर बेरोज़गार हैं।

2. आज एक भारतीय की औसत उम्र 26 वर्ष है, जबकि चीनी की 34 वर्ष है तथा यूरोपीय, अमरीकी या जापानी की 40 से 45 वर्ष के बीच हैं। भारत एक अत्यन्त युवा राष्ट्र है! हमें अपने लोगों के कौशल को संवारने की ज़रूरत है, ताकि हम इतने सारे, 'युवा भारतीयों' का लाभ उठा सकें।

3. चीन अपने जीडीपी का तकरीबन 2.5% व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (वीईटी) में 500,000 वीईटी केन्द्रों में खर्च करता है, जिनमें लगभग 3000 व्यावसायिक पाठ्यक्रम शामिल हैं। भारत अपनी जीडीपी का मुश्किल से 0.1% वीईटी में 8500 वीईटी केन्द्रों में खर्च करता है, जिनमें करीब 400 व्यावसायिक पाठ्यक्रम ही हैं। वीईटी में वास्तविक खर्चे ज़्यादा है, लेकिन उनके आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

4. सामान्य शिक्षा तथा ज्ञान अर्जन से भिन्न व्यावसायिक शिक्षा सीधे-सीधे रोज़गार एवं सम्पत्ति सृजन से जुड़ी हुई है। वीईटी का आम आदमी, कुशल तथा प्रशिक्षित श्रमशक्ति का इस्तेमाल करने वाले संगठनों एवं विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी के रूप में राष्ट्र को तभी पहुंचेगा, जब हमारे 80% युवा 15 वर्ष की उम्र के बाद कॉलेज की सामान्य पढ़ाई यानी बी.ए., बीएस.सी. या बी.कॉम करने के बजाए वीईटी की ओर कदम बढ़ाएंगे

5. विश्व मार्केट्स को कुशल युवा श्रमशक्ति दिलाने के लिए भारत को वीईटी का इस्तेमाल करते हुए जनसांख्यिकी का लाभ उठाते हुए भविष्य में अपनी भागीदारी बढ़ानी होगी।

6. 490 मिलियन की मौजूदा श्रमशक्ति को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है संगठित क्षेत्र – 30 मिलियन, असंगठित क्षेत्र – 460 मिलियन। हमारे सामने आज सबसे बड़ी चुनौती है 460 मिलियन के असंगठित क्षेत्र के लिए विश्वस्तरीय वीईटी उपलब्ध कराना।

7. ज़्यादातर छोटे मध्यम उद्योग असंगठित क्षेत्र में हैं। छोटे मध्यम उद्योग अर्थव्यवस्था के असली 'गति उत्प्रेरक' हैं। छोटे मध्यम उद्योगों में व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण युक्त युवाओं के शामिल होने से यह विश्व में युवा, प्रतिभावान तथा प्रशिक्षित मानव शक्ति के एक सबसे बड़े समूह के रूप में उभरेगा। यह भारत को एक आर्थिक शक्ति के रूप में अग्रसर करेगा।

8. स्विटजरलैंड और ऑस्ट्रिया जैसे, देशों में प्रत्येक में 8 मिलियन की आबादी के लिए 5000 वीईटी केन्द्र हैं। यहां की जमीन जड़ है जिनमें न तो खनिज पदार्थ हैं और न ही ऊर्जा, लेकिन ऊंची गुणवत्ता के मानव संसाधनों के कारण यहां की जीडीपी भारत की क्रमशः 33% व 23% के समान है।

9. वर्तमान 'एप्रेन्टिस एक्ट' देश की मौजूदा ज़रूरतों के अनुरूप नहीं है। इसे पूरी तरह से सुधारा जाना चाहिए, ताकि कार्यबल के करीब 10% को एप्रेन्टिस के रूप में काम काज के साथ-साथ प्रशिक्षित किया जा सके।

<1 बिलियन = 1000 मिलियन> <1 मिलियन = 10 लाख> <1 करोड़ = 100 लाख = 10 मिलियन> <1 यूएस$ = रु. 60 (लगभग)>

i Watch सम्मानित नागरिकों का कहना है

पिछले दस वर्षों के दौरान भारतीय संगठनों तथा व्यक्तियों से पत्रों तथा संवादों के रूप में प्राप्त **प्रतिसादों व प्रतिक्रियाओं** का दस्तावेजीकरण किया गया है।

इनमें से कुछ पत्राचारों का संकलन एक डॉजियर के रूप में किया गया है जो कि हमारे मुंबई स्थित कार्यालय तथा हमारे अवैतनिक परामर्शदाताओं के पास उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ प्रतिसाद का उल्लेख हमने यहां किया है।

संक्षेप में, हमें *i Watch* द्वारा अपनायी गई उपरोक्त रणनीति से लोगों की सोच तथा कार्रवाइयों में आए परिवर्तनों को देखकर प्रसन्नता है।

• अपने पर्चे के द्वारा आपने ज्ञान की जो अमूल्य बातें कही हैं, उनमें से कुछ का उपयोग मैं कॉर्पोरेट अभिशासन पर अपनी नीतियों की रचना करते समय करना चाहूंगा।
एन.आर. नारायण मूर्ति, चेयरमैन तथा चीफ़ मेंटर, इंफोसिस

• नागरिकों के हित में *i Watch* जो सराहनीय कार्य कर रहा है, चैम्बर उसकी सराहना करता है।
पी.एन. मोगरे, सेक्रेटरी जनरल, इंडियन मर्चेन्ट्स चैम्बर

• *i Watch* का ध्येय दरअसल कृष्ण खन्ना का ध्येय है, जिसका लक्ष्य जहां वे मौजूद हों, उस कार्य या जीवन का कायाकल्प करना है।
डॉ. पी.एस. राणा, चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर, हुडको

• हम 500 से अधिक एनजीओ के साथ विचार–विमर्श और व्यवहार करते हैं और इस आधार पर हम कहना चाहेंगे कि हमने *i Watch* को एक अनूठा तथा निराला एनजीओ पाया है।
विनय सोमानी, मैनेजिंग ट्रस्टी, Karmayog.com

• हम भारत की जनता के ज़्यादा से ज़्यादा फायदे के लिए नीतियां बनाने के *i Watch* के विचारों व सुझावों से पूरी तरह सहमत हैं।
अनुपम मित्तल, प्रेसिडेन्ट तथा सीईओ, प्यूपल ग्रूप

• मुझे *i Watch* जैसे किसी और एनजीओ की जानकारी नहीं है, जिसके पास भारत की कायाकल्प करने के इतने उच्च विचार हों।
मेजर जनरल डी. एन. खुराना, डायरेक्टर जनरल,
ऑल इंडिया मैनेजमेन्ट एसोसिएशन

• शैक्षणिक सुधार और भारत के कायाकल्प हेतु योजनाओं पर वास्तव में अमल करने के लिए विभिन्न अंशधारकों के साथ जागरूकता पैदा करने, समाधान सुझाव देने तथा कार्य योजनाएं बनाने में एवं नेटवर्किंग में *i Watch's* के प्रयासों की मैं मुक्त हृदय से प्रशंसा करती हूं।
सुषमा बेर्लिया, प्रेसिडेन्ट,
एज्यूकेशन प्रमोशन सोसाययी फॉर इंडिया

• इन्होंने भारत की उच्च एवं निरन्तर कायम रहने वाली वृद्धि के लिए एक ढांचा तैयार किया है! इसके लिए वे जागरूकता पैदा करना और नीति विषयक परिवर्तनों को प्रभावित करना चाहते हैं। यह सचमुच एक अनूठी रणनीति है, जिसके दूरगामी परिणाम होंगे।
राजीव कुमार, चीफ इकॉनॉमिस्ट, सीआईआई

• *i Watch* भारत की जनता के हित में उत्तम अभिशासन की आवश्यकता और महत्त्व के बारे में लोगों को बताने तथा संबंधित नीतिगत परिवर्तनों की जरूरतों को समझाने की दिशा में अद्‌भुत काम कर रहा है।
डॉ. बी.पी. ढाका, सेक्रेटरी जनरल, पीएचडीसीसी एंड आई

• एक शैक्षणिक और एचआरडी कंसल्टेन्ट हाने के नाते मैं *i Watch* की इस अनूठी योजना में पूरी तरह से यकीन करता हूं कि भारत के 95% युवा वर्ग को व्यावसायिक शिक्षा के 3000 क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस बात में अद्‌भुत नवीनता है! अगर इस पर अमल किया जाता है तो भारत की बेरोज़गारी की समस्या को एक बड़ा समाधान मिल जाएगा।
प्रो. ऋषिकुमार पाण्ड्या, अंतर्राष्ट्रीय मैनेजमेन्ट गुरु.

• मैंने आपकी पुस्तिका *'भारत का कायाकल्प'* को बड़ी रूचि के साथ पढ़ा है तथा इसमें आपके द्वारा किए गये उपयोगी अध्ययनों एवं दिए गये सुझावों से काफी प्रभावित हुआ हूं, जिसके लिए मैं आपको अपनी शुभकामनाएं देना चाहता हूं। निस्संदेह इसमें उठाए गये मुद्दे और की गई सिफारिशें अपना ठोस मूल्य रखती हैं।
बी.एन. युगान्धार, सदस्य योजना आयोग

• उत्तम अभिशासन के बारे में मैं आपके साथ विस्तृत चर्चा करना चाहूंगा ताकि आपकी पुस्तिका *'भारत का कायाकल्प' में दिए गये कुछ सुझावों पर आगे की कार्रवाई पर विचार किया जा सके।*
एम. दामोदरन, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, आईडीबीआई

• मुझे *i Watch* द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्य की जानकारी है। उत्तम अभिशासन, प्रशिक्षण तथा रोज़गार के बारे में आपके दृष्टिकोण को मैंने नोट किया है।
एम. वेंकटैया नायडू, अध्यक्ष, भाजपा

• अपने इस उत्तम कार्य को निरन्तर जारी रखिए।
डॉ. नटराजन–ऑल इंडिया काउन्सिल फॉर टेक्निकल एज्यूकेशन

• भारत के उत्थान के लिए आपके सम्पूर्ण कार्यक्रम और प्रयासों ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया है।
बाबू खलफ़ान, अमेरिका स्थित अनिवासी भारतीय

• *i Watch* ने जो दूरदर्शिता निर्धारित की है वह भारत के बेहतर सुशासन के लिए बड़ा ही सामायिक कदम है। आपके फाउन्डेशन के साथ जुड़ने में हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।
दिपांकर सनवाल्के, एग्ज़िक्यूटिव डायरेक्टर, केपीएमजी

• सर्वप्रथम मैं आपकी समस्त प्रस्तुतियों के लिए आपको बधाई देना चाहती हूं! आपने हमारे द्वारा व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण की दिशा में किए गये कार्यों पर दिलचस्पी दिखाई, इसके लिए प्रसन्नता एवं गौरवान्वित महसूस करती हूं। मुझे इस क्षेत्र में उज्ज्वल संभावनाएं नज़र आती हैं।
प्रो. रूपा शाह, वाइस चांसलर,
एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय

• हम आईसी सेन्टर फॉर गवर्नेन्स के संस्थापक सदस्य के रूप में आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। आपके द्वारा चुने गये मुख्य मुद्दों तथा तय किए गये एक्शन प्लान्स ने एग्ज़िक्यूटिव कमेटी के सदस्यों को प्रभावित किया है।
प्रभात कुमार, भूतपूर्व मंत्रालय सचिव एवं
अध्यक्ष आईसी सेंटर फॉर गवर्नेन्स

• हमारे मुख्य सचिव के साथ आपकी बातचीत के सिलसिले में हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि अगर आप दिल्ली सचिवालय में एनसीटी सरकार के करीब 450 वरिष्ठ एवं मध्य स्तर के अधिकारियों के लिए सुशासन तथा प्रभावी प्रशासन पर परस्पर प्रभावी सत्रों का आयोजन कर सकें, तो हमें अत्यन्त प्रसन्नता होगी।
प्रकाश कुमार, एआर व आईटी सचिव, एनसीटी सरकार

• **वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम** तथा **सीआईआई** द्वारा आयोजित ''भारत तथा विश्व 2025' परिदृश्य पर परस्पर प्रभावी वर्कशॉप में *i Watch* को एक विशेष पैनल के अंग के रूप में टिप्पणियों तथा सुझावों के लिए आमंत्रित किया गया है।
कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडिया इंडस्ट्री

• आपके द्वारा किए गये सराहनीय कार्य के लिए कृपया मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपके कार्य की सफलता के लिए मैं शुभकामनाएं देते हुए पूरे विश्वास के साथ यह कहना चाहता हूं कि आपके प्रकाशन जन–जागरूकता का एक शिक्षाप्रद माहौल पैदा करेंगे तथा ऐसे मुद्दों की ओर ध्यान केन्द्रित करेंगे जिनकी ओर हमें बहुत ज़्यादा ध्यान देने की ज़रुरत है।
एम. वी. राजसेखरन, योजना राज्यमंत्री, योजना आयोग

• अगर आप 'कॉन्फ्रेन्स ऑन एनआरआई–सिविल सोसायटी पार्टनरशिप' में भाग लेने के लिए अपना अमूल्य समय निकाल सकें तथा इसके निष्कर्षों में योगदान दे सकें तो हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे।
डॉ. आबिद हुसैन, चेयरमैन,
ग्रुप फॉर इकोनॉमिक एंड सोशियल स्टडीज़

• आपके सहयोग–समर्थन के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। इसने हमें एक मज़बूत और सक्रिय संगठन के रूप में उभरने में मदद की है...
पद्मिनी सोमानी; डायरेक्टर, सलाम बॉम्बे फाउन्डेशन

• आपके द्वारा प्रकाशित सामग्री में बहुत ही रोचकता है। आपके नजरिए में जो सरलता और व्यावहारिकता है, वह मुझे बहुत प्रभावित करती है।
के. एल. चुघ, चेयरमैन, इमिराइट्स, आईटीसी लिमिटेड

• *i Watch* एक अद्भुत कार्य कर रहा है। आपका यह शोधपूर्ण कार्य हमें अपने अभियान के लिए बहुत सी उपयोगी सामग्री देगा।
सुदेश के. अग्रवाल, सेक्रेटरी जनरल,
ऑल इंडियन्स फाउन्डेशन

• निस्संदेह यह एक संघर्षपूर्ण कार्य है तथा आपने ढेर सारे मूल्यवान आंकड़ें जमा किए हैं। मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं कि मैं अपनी सीमित क्षमता के साथ आपके इन आंकड़ों को समस्त संभावित मंचों तक पहुंचाने की कोशिश करूंगा।
पी. एन. रॉय, चेयरमैन, इंडो–आशी ग्लास लि:

• आपने हमारे सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक ढांचे की जिन कुरीतियों को गिनाने की कोशिश है, उन पर निस्संदेह ध्यान दिया जाना जरूरी है।
आर. एस. अग्रवाल, जॉयन्ट चेयरमैन,
एनामी ग्रुप ऑफ कंपनीज़

• मैंने **'भारत का सुशासन और प्रशासन'** विषय पर आपने पर्चे को बहुत ही ध्यान से पढ़ा है और एक ओर इसे पढ़कर जहां प्रभावित हुआ हूं, तो दूसरी ओर उत्तेजित भी। इसमें हर किसी को सोचने और मज़बूर करने की सामग्री है। आपने सही नब्ज़ पर हाथ रखा है। आपने भारत की वास्तविक कमियों की ओर इशारा किया है।
प्रकाश अल्मेडा, डायरेक्टर,
इंस्टिट्यूट फॉर स्टडी ऑफ इकोनॉमिक इश्यूज़

• मुझे पूरा विश्वास है कि जिसे भी यह नोट पढ़ने का अवसर मिलेगा, वह गहराई से कुछ सोचने और कम से कम अपनी तरफ से कुछ कदम उठाने को मज़बूर हो जाएगा... ताकि आपने जो दृष्टि दिखाई है उसे वास्तविकता का रूप दिया जा सके।

एन. विट्ठल, सेन्ट्रल विजिलेन्स कमीशन, सीवीसी.

• आपकी अवधारणा उत्कृष्ट है, विचारों में मौलिकता है और तथ्यों में मस्तिष्क को झकझोर कर रख देने की क्षमता है। मैं कामना करता हूं कि आपके विचारों को अखिल भारतीय मीडिया का पूरा समर्थन मिले।

एच. एन. दस्तूर, एग्ज़िक्यूटिव डायरेक्टर,
भारतीय विद्या भवन

• जहां जागरूकता होती है, वहां कदम भी आगे बढ़ते हैं। इस जिहाद की दिशा में मैं तथा अनेक भारतीय आपके साथ हैं। आप इस सिलसिले को बनाए रखिए।

सुशील गुप्ता, पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर, रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3010

• मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपके पत्र के **एक सूत्रीय कार्यक्रम** के अनुदार मैं यथासाध्य अपना दायित्व पूरा करता रहूंगा।

जॉर्ज फर्नांडीज़, पूर्व रक्षा मंत्री, भारत सरकार

• आपके मूल्यवान अनुभव का लाभ पाने के लिए हम खुद को भाग्यशाली मानते हैं।

एयर कमोडोर अमृत लाल, एग्ज़िक्यूटिव डायरेक्टर,
इंडियन सोसायटी फॉर ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट

• नोट में आपके द्वारा व्यक्त किए गये दृष्टिकोणों की सराहना करते हुए मैं ऐसे ही और भी विचारों, सुझावों और कार्यक्रमों की अपेक्षा करता हूं, जो हमारे समाज को सही दिशा में आगे ले जाने में अपना योगदान दें।

सुरेश प्रभू, सांसद सदस्य, लोकसभा

i Watch के बारे में

i Watch क्या है?

i Watch एक राष्ट्रीय नागरिक अभियान है, जिसका उद्देश्य 'भारत का कायाकल्प' करना है। '*i*' का अर्थ है भारत, भारतवासी, आाप और मैं। *Watch*' का अर्थ है कि देश में जो कुछ भी हो रहा है उस पर हम नज़र रख रहे हैं। तथा देशवासियों को आगाह कर रहे हैं ताकि देश में सुधारों के लिए हम जन जागरूकता पैदा कर सकें।

'*i*' छोटा है क्योंकि गुरूओं ने हमें सदा यही सिखाया है कि विनम्रता से ही सच्चाई को जान सकते हैं। *i Watch* **मानव संसाधन के विकास, उत्तम अभिशासन, अर्थव्यवस्था, उद्यमिता** तथा **रोज़गार की उत्पत्ति** पर केन्द्रित है।

i Watch एक रजिस्टर्ड चैरिटी है। जिसका हेड ऑफिस मुंबई, भारत में स्थित है।

i Watch को दिये जानेवाले दान पर भारतीय संगठनों तथा व्यक्तियों को आयकर लाभ 80जी का लाभ भी मिलता है।

विदेशी दान स्वीकार करने हेतु एफसीआरए की स्वीकृति जनवरी–2009 में मिल चुकी है।

भारत का कायाकल्प करने के लिए हमारी योजना क्या है?

i Watch तीन चरणों में कार्य करता है।

1. **जागरूकता पैदा करना**
   जागरूकता पैदा करने के लिए *''भारत को एक ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था बनाना', ''भारत जिसे शायद आप न जानते हों!'' और भारत के लिए क्रियात्मक योजना जैसे प्रकाशनों का उपयोग किया जाता है।*

2. **समाधान सुझाना तथा कार्य योजनाएं बनाना**
   इसे हम अपनी वेबसाइट, परस्परप्रभावी कार्यशालाओं तथा हमारी 104 पृष्ठों की पुस्तिका– *भारत का कायाकल्प* के ज़रिए प्राप्त करते है।

3. **वास्तविक कार्यान्वयन**
   इसके लिए हम सरकार, जनता, निजी संगठनों और एनजीओ के साथ सहयोग एवं नेटवर्क से ताल–मेल बनाये रखते हैं।

अब तक *i Watch* ने क्या हासिल किया है?

सन 1992, में जब हमने भारत का कायाकल्प करने की अपनी यात्रा की शुरूआत की थी, तो हमारे पास कोई निश्चित दिशा या राह नहीं थी।

लगभग 4 वर्षों की शोध तथा यात्रा के पश्चात हमने भारत के कायाकल्प हेतु ध्यान केन्द्रण क्षेत्रों के रूप में कुछ बुनियादी निष्कर्ष निकाले।

यहां तक पहुंचने में हमें सन 1996 तक का समय लग गया। असली कार्य 1997 से प्रारम्भ हुआ। अंततः हमने निम्नलिखित चार प्रमुख क्षेत्रों को चुना:–

1. **मानव संसाधन विकास, व्यावसायिक शिक्षा तथा रोज़गार उत्पत्ति**
2. भारत का **शासन तथा प्रबंधन**
3. लघु उद्योग, लघु मध्यम उद्योग तथा संबंधित श्रम कानूनों के बारे में **नीति विषयक परिवर्तन**
4. **अर्थव्यवस्था तथा उद्यमशीलता** जैसे कि निर्यात, रीटेल, थोक बिक्री, निर्माण, यात्रा व टूरिज्म, हेल्थकेयर, बुनियादी संरचना और कृषि पर जोर दिया जाना

i Watch को इन चारों क्षेत्रों में कुछ हद तक सफलता मिली है क्योंकि हम निर्णय लेने वाले लोगों के एक बड़े वर्ग के सोचने के तरीके में परिवर्तन ला पाए हैं। इसके लिए हमने निम्नलिखित उपायों का अपनाया हैं:–

1. परस्पर प्रभावी कार्यशालाएं, सेमिनार तथा लेख
2. प्रकाशन, *भारत को एक ज्ञानमूलक अर्थव्यवस्था बनाना! वह भारत शायद जिसकी ये बातें नहीं जानते हों तथा भारत के लिए कार्यात्मक योजना*
3. 104 पृष्ठों की पुस्तिका–*भारत का कायाकल्प*
4. वेबसाइट www.wakeupcall.org
5. एमएचआरडी, योजना आयोग, चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स, सीआईआई, फिक्की, सूचना, प्रौद्योगिकी मंत्रालय आदि की राष्ट्रीय समितियों में हिस्सेदारी करना।

सीआईआई, फिक्की, एसोकैम, पीएचडीसीसी एंड आई, आईएमसी, एमईडीसी, बीसीसी एंड आई, के सदस्य के रूप में तथा आईबीए, आरबीआई और एमओएफ के साथ चर्चा करके हम **एमएसएमई** के महत्त्व और **एसएसआई** की सीमित–

जीवन में एक मात्र स्थिर चीज़ है परिवर्तन

सम्बद्धता की बात को काफी हद तक समझा पाए हैं।

भारत के दस राज्यों में रोज़गार उत्पत्ति और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण पर यूरोपीय संघ, **ईयू** द्वारा मान्यता प्राप्त एक संयुक्त परियोजना।

सुशासन के सामने में राज्य सरकारों जैसे कि दिल्ली एनसीटी ने हमारे साथ चर्चा की है तथा **सुशासन और प्रशासन** के बारे में हमसे सलाह–मशविरा किया है।

शिक्षा में सुधार के क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण के बारे में हमारी वैचारिक प्रक्रिया पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय, इग्न्यू एवं योजना आयोग द्वारा विचार किया गया है।

सीआईआई, फिक्की, एसोकैम, ईपीएसआई, पीएचडीसीसी एवं आई और अन्य के साथ विचार–विमर्श के ज़रिए **उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के विनियमीकरण** पर ज़बरदस्त स्वीकृति मिल रही है।

अर्थव्यवस्था तथा उद्यमशीलता के क्षेत्रों में हमें **वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम, डब्ल्यूईएफ** जैसे दिग्गजों ने हमारी प्रतिक्रिया और सलाह–सुझावों के लिए आमंत्रित किया है।

पिछले 20 वर्षों में हमने अपनी पुस्तिका **भारत का कायाकल्प** की 600,000 से अधिक प्रतियां वितरित की हैं, अनेक परस्पर प्रभावी सेमिनारों का आयोजन किया है तथा हमारी वेबसाइट के ज़रिए हमारे विचारों व सोच का प्रचार–प्रसार किया है।

हमारे प्रकाशन 13 भाषाओं अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, मराठी, बांगला, असमिया, उड़िया, तमिल, तेलुगु, कन्नड, पंजाबी, उर्दू तथा मलयालम में उपल्ध हैं, क्योंकि हमारे देश में केवल 7% भारतीय ही अंग्रेजी समझ पाते हैं।

i Watch सिद्धान्त, मिशन, लक्ष्य

मार्गदर्शी सिद्धान्त

1. **सकारात्मक रवैया**
   यह विश्वास करना कि सही परिवर्तन संभव है।
2. **शोध**
   पूरी तैयारी के बिना कदम नहीं बढ़ाना है।
3. **प्रभावी संवाद**
   सभी लोगों तक पहुंचने के लिए संवादशीलता को साधन बनाया जाए।
4. **समाज की ताकत पर विश्वास**
   यह मानना कि सामूहिक प्रयासों से सब कुछ संभव है। समाज को साथ लेकर चलने से ही कायाकल्प होगा।
5. **सकारात्मक भागीदारी**
   सब में भागीदारी की भावना जगायी जाए। वैकल्पिक उपाय सोचे जाएं या नये उपाय खोजे जाएं।
6. **बंटवारे की संस्कृति न हो**
   कोई राजनीतिक मान्यता नहीं।
7. **राजनीति उन्मुखी नज़रिया**
   राजनीतिज्ञ विभिन्न चक्रों के शिकार होते हैं, उन्हें खलनायक नहीं माना जाना चाहिए।
8. **राजनैतिक प्रक्रिया के प्रति सम्मान**
   इस बात को मान्यता देना कि राजनीति प्रजातंत्र का केन्द्र बिन्दु है तथा सच्ची राजनीति एक महान आदर्श के लिए होती है।
9. **राजनैतिक विकल्प**
   प्रजातंत्र का कोई विकल्प नहीं है। प्रजातंत्र का विकल्प सिर्फ बेहतर प्रजातंत्र हो सकता है।
10. **व्यावसायिकता**
    व्यक्तिगत भूमिकाएं तथा जिम्मेदारियां सौंपी जाएं जिनमें सदैव सर्वोच्च स्तर की प्रतिबद्धता व क्षमता हो।

हमारा इतिहास

विषय केन्द्रण हमेशा **मानव संसाधन विकास, सुशासन** तथा **अर्थव्यवस्था** पर रहा है।

मानव संसाधन विकास–सुशासन–नेतृत्व–अर्थव्यवस्था तथा उद्यमशीलता–आधारभूत संरचना की परस्परनिर्भरता के महत्त्व को समझा जाना बहुत जरूरी है। ये सभी कई तरीके से एक दूसरे पर निर्भर हैं। इन्हें एक दूसरे से अलग करके देखना संभव ही नहीं है। ऐसा करने से देश की क्षमता घटेगी और उसे नुकसान ही पहुंचेगा।

मिशन

राष्ट्र के भविष्य निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले क्षेत्र में भारतीय नागरिकों के मन में एक जागृति उत्पन्न करना जैसे इस क्षेत्र में **सुशासन तथा प्रभावी शासन,** यह अर्थव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित करता है, तथा इसे कैसे हासिल किया जा सकता है ?

संगत मानव संसाधन विकास का महत्त्व। वर्तमान शिक्षा में 'लाइसेंस राज' को समाप्त करना।

नीतियों में परिवर्तन की आवश्यकता जैसे कि **लघु उद्योग** की मौजूदा सीमितकारी परिभाषा को मिटाना तथा इस लघु व मझोले उद्यम या **एमएसएमई** में विस्तृत करना।

भारत को एशिया के दूसरे अग्रणी देशों को समकक्ष बनाने के लिए **संगत श्रम एवं प्रशासनिक सुधारों** की अत्यन्त आवश्यकता है, ताकि हमारे व्यावसायिक अग्रणियों और प्रबंधकों को मुकाबले के लिए समान धरातल मिल सके।

इसीलिए **निर्यात और पर्यटन** को मौजूदा स्तरों से 1000% बढ़ाया जाना चाहिए।

प्रजातंत्र में लोगों की भागीदारी आवश्यक है। परिवर्तन संभव है और आसानी तब होगी जब सूचना नीचे से ऊपर जाएगी, न कि ऊपर से नीचे आएगी। इसीलिए हमारा प्रस्तुतिकरण आम आदमी या भारत के नागरिकों के लिए डिज़ाइन किया गया है।

लक्ष्य

सच्चे अर्थों में भारत को विश्वस्तरीय राष्ट्र बनाना, भारत में 1210 मिलियन लोगों की विशाल आबादी होने के कारण **बाजार में मांग बहुत है, लेकिन खरीदने के लिए पैसा कहां है?**

हमें अपने निर्यात को बढ़ाना होगा ताकि हमारी खरीदने की ताकत बढ़ सके !

विश्व संसाधन आधार बनने के लिए भारत का भविष्य उत्पादन; व्यापार तथा सेवाओं में निहित है, चूंकि **विश्व व्यापार का 97.4% तथा विश्व की 97.8% शक्ति भारत के हाथ में नहीं है।**

एक विहंगावलोकन दर्शाता है कि:–

- भारत को आवश्यकता है कि वह अपनी सफलता के अपने उदाहरणों जैसे **सूचना प्रौद्योगिकी तथा सॉफ्टवेयर** एवं **हीरों के निर्यात** के अलावा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों को भी विकसित करें।
- उच्च क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) के साथ (16 रु. की पीपीपी = 1 अमरीकी डॉलर) भारत के पास माल तथा सेवाओं का निर्यात करने की अपार क्षमता है। भारत द्वारा इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सुशासन तथा प्रभावी प्रशासन आवश्यक है।
- चीन के राजनीतिज्ञ और कर्मचारी **चलते–फिरते अर्थशास्त्र** के बारे में ही सोचते हैं तथा इसी पर बात करते हैं इसी कारण से प्रवासी चीनी तथा विदेशी निवेशकों का चीन पर विश्वास है। सौभाग्य की बात है कि अब भारत के प्रति सकारात्मक धारणा है।

सामान्य जानकारी

i Watch के संस्थापक

कृपया www.wakeupcall.org देखें।

i Watch के अवैतनिक परमर्शदाता

कृपया www.wakeupcall.org देखें।

इंफ्रास्ट्रक्टर, पूंजी तथा आमदनी खर्च के कारण
i Watch की गतिविधियों के वित्तपोषण

की व्यवस्था संस्थापन कृष्ण खन्ना और उनके परिवार द्वारा की जाती है।

i Watch का सदस्य कैसे बनें

यह बहुत ही सरल और आसान है, krishan@wakeupcall.org पर बस एक ई–मेल यह बताते हुए कीजिए कि आपकी बैकग्राउन्ड क्या है तथा आप इसका सदस्य क्यों बनना चाहते हैं।

जरूरत बस इतनी सी बात की है कि आप भारतीय नागरिक, प्रवासी भारतीय या फिर विदेश में बसे भारतवंशी हों।

हमारे गैर सरकारी संगठन के प्रयास को दुगुना कीजिए! इसे जितना हो सके बढ़ाइए!

संदर्भ व अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तिका के लघु लेखों को पढ़ें।

गैरसरकारी संगठनों के साथ नेटवर्किंग

i Watch से मिलते–जुलते मुद्दों पर कार्य करने वाले भारत में काम कर रहे अन्य गैर सरकारी संगठनों के साथ हम नेटवर्क बनाने के अलावा उनके प्रयासों को और फैलाना चाहेंगे।

कॉपीराइट तथा उद्धृत करना

इस पुस्तिका में संगृहीत सभी सामग्री, ग्राफिक्स, लोगो, इमेज, डाटा *i Watch* तथा अन्य जानकारी देने वालों की संपत्ति है। इस पुस्तिका या इसके किसी भी अंश को न तो उद्धृत करें, नकल करें, प्रकाशित करें, प्रचारित करें या न ही इस्तेमाल करें! इस पुस्तिका के किसी भी अंश को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से या इलेक्ट्रॉनिक तौर *i Watch* की लिखित अनुमति तथा स्वीकृति के बिना पुनः उद्धृत नहीं किया जा सकता!

भारत में जागृति उत्पन्न करने में आपकी सहायता का स्वागत है।

- आपका समय और आपका प्रयास।
- भारत के भीतर तथा बाहर आपकी नेटवर्किंग।

परस्परप्रभावी कार्यशालएं

हम निम्नलिखित परस्परप्रभावी कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं:–

1. भारत के लिए संगत **निर्माण की** नीति
2. भारत के लिए संगत **शिक्षा** नीति
3. **वैश्वीकरण** तथा भारत किस प्रकार + 10% प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि कर सकता है।
4. **उत्तम शासन** तथा नागरिकों को यह किस प्रकार लाभ पहुंचाता है।
5. प्रतिवर्ष 10 मिलियन **नये रोज़गार अवसर** पैदा करना।
6. कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद **धनोपार्जन कैसे करें ?**
7. शिक्षा के माध्यम से **भारत का कायाकल्प।**

अपेक्षित न्यूनतम समय 90 से 120 मिनट है। हम 180 मिनट के परस्पर प्रभावी सत्रों का सुझाव देते हैं। हम अनुरोध करने पर ऐसे परस्पर प्रभावी सेमिनारों का आयोजन नाममात्र के शुल्क पर करते हैं। शुल्क अनुरोध के अनुसार लेते हैं!

सम्पर्क करें:

i Watch
211, ऑलिम्पस
अल्टामाउण्ट रोड
मुंबई 400 026, भारत।
krishan@wakeupcall.org
www.wakeupcall.org
फ़ोन: +91 22 2353 5466
फ़ैक्स: +91 9821140756

चैरिटी कमिश्नर से रजिस्ट्रेशन

i Watch एक रजिस्टर्ड चैरिटी है, जो कि कमिश्नर, मुंबई महाराष्ट्र, भारत से रजिस्टर्ड है। फाइल नं. 3130, 18 मई 2001 रजिस्ट्रेशन नं. ई–21498 दिनांक 29 जनवरी, 2004।

आईटीओ के अधीन धारा 80जी के अंतर्गत आयकर से छूट प्राप्त। और भी छूट की प्रतीक्षा है!

विदेशी अनुदानों के लिए एफसीआरए मान्यता पत्र सं. 083720122 दि.13–01–2009 को गृह मंत्रालय से प्राप्त। यह अनुदान आर्थिक, शैक्षिक तथा सामाजिक क्षेत्रों के लिए है।

स्रोत के संदर्भ एवं ग्रंथ

जानकारी तथा आंकड़ों के स्रोत

- World Fact Book -CIA
- *World Development Indicators,* प्रकाशक World Bank www.worldbank.org
- UNIDO प्रकाशन– www.unido.org
- OECD प्रकाशन – www.oecd.org
- UNESCO प्रकाशन – www.unesco.org
- UNDP प्रकाशन – www.undp.org
- Centre for Civil Society, नई दिल्ली – www.ccsindia.org
- जनग्रह फाउन्डेशन, बंगलोर – www.janaagraha.org
- Indian NGOs.com – www.indianngos.com
- DEIS, पुणे – www.deispune.org
- Educational Promotion Society of India – www.epsfi.org
- School Choice नई दिल्ली – www.schoolchoice.org
- *Statistical Outline of Indila – 2012–2013* प्रकाशक Tata Services Ltd.
- *Business Today,* दिनांक 28 अप्रैल, 2002 1996 ते 2014 के बीच के अनेक अंक
- *Business World* दिनांक 10 जून 2002 1997 ते 2014 के बीच के अनेक अंक
- *Business India* दिनांक 22 जुलाई, 2002 1996 ते 2014 के बीच के अनेक अंक
- *The Ecomomic Times, The Finanical Express, Business Standard & Business Line* चीन तथा भारत की अर्थव्यवस्था एवं उनकी परस्पर तुलना पर अनेक लेख
- *India Today* 1996 से 2014 के बीच के अनेक अंक

चीन के बारे में पढ़ने के लिए सुझाव

- फॉरेन लैंग्वेजेज़ प्रेस, बीजिंग द्वारा मुद्रित चीन के बारे में पुस्तकें, वेबसाइट: www.flp.com.cn
- *द चाइनीज़ इकॉनॉमी इन्टू द ट्वैन्टी फर्स्ट फर्स्ट सेंचुरी–फोरकास्ट्स एंड पॉलिसीज़* लेखक ली ज़िगवेन
- *रिफॉर्मिंग चाइनीज़ स्टेट–ओन्ड इन्टरप्राइजेज़,*
  लेखक गावे शैंगक्वान तथा शी फुलिन।
- *चाइनाज़ इकॉनॉमिक रिफॉर्म एट द टर्न ऑफ द सेंचुरी, लेखक शी फुलिन*
- *इन्वेस्टिंग इन चाइना: क्वेश्चन्स एंड आन्सर्स*
  लेखक पैन झिलाँग तथा पैन शी
- *डेली चायना, बीज़िंग संस्करण*

कृष्ण खन्ना और *i Watch* **सन 2005 से 2014 तक राष्ट्रीय समितियों में**

1. **प्रधानमंत्री का टास्क फोर्स** – रोजगार उत्पत्ति हेतु कौशल निर्माण, योजना आयोग, नई दिल्ली
2. **योजना आयोग,** नई दिल्ली – सेकेन्ड्री शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा पर 11वीं योजना कार्य समूह
3. **मानव संसाधन विकास मंत्रालय,** नई दिल्ली –सेकेन्ड्री शिक्षा पर व्यावसायिक शिक्षा पर 11वीं योजना कार्य समूह
4. **इग्न्यू,** मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली – पत्राचार शिक्षा पर 11वीं योजना कार्य समूह
5. **पीएचडीसीसीएंडआई,** नई दिल्ली – सह–अध्यक्ष – कमेटी ऑन एज्यूकेशन एंड इंडस्ट्री को–ऑपरेशन
6. **सीआईआई,** नई दिल्ली – टास्क फोर्स ऑन वोकेशनल एज्यूकेशन एंड ट्रेनिंग के चेयरमैन और मेम्बर नेशनल कमेटी ऑन एज्यूकेशन
7. **फिक्की,** नई दिल्ली – मेम्बर नेशनल कमेटी ऑन एज्यूकेशन
8. **एसोकैम,** नई दिल्ली – सह अध्यक्ष एक्सपर्ट कमेटी ऑन एज्यूकेशन
9. **ईपीएसआई,** एज्यूकेशनल प्रमोशन सोसायटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली – चेयरमैन – वोकेशनल एज्यूकेशन एंड ट्रेनिंग कमेटी
10. **पार्लियामेन्ट्री कमेटी** ऑन इंडस्ट्री एंड लेबर, नई दिल्ली – आमंत्रित
11. **रोटरी इंटरनेशल,** रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3140, बॉम्बे टाउन, बॉम्बे, डायरेक्टर – वोकेशनल सर्विसेज़
12. **एआईसीटीई,** ऑल इंडिया काउन्सिल फॉर टेक्निकल एज्यूकेशन, मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली – गवर्निंग बोर्ड ऑन वोकेशनल एज्यूकेशन के सदस्य
13. **टाइम्स फाउन्डेशन,** नई दिल्ली – मानद सलाहकार – वोकेशनल एज्यूकेशन एंड ट्रेनिंग
14. **नेशनल नॉलेज कमीशन,** एनकेसी, नई दिल्ली. इन्फॉर्मल एक्सचेंज ऑफ नोट्स एंड थॉट प्रोसेस
15. **श्रम तथा नियोजन मंत्रालय,** नई दिल्ली. इन्फॉर्मल एक्सचेंज ऑफ नोट्स एंड थॉट प्रोसेस
16. **प्रधानमंत्री का सचिवालय,** नई दिल्ली. इन्फॉर्मल एक्सचेंज ऑफ नोट्स एंड थॉट प्रोसेस
17. **नेशनल मैन्युफैक्चरिंग कॉम्पिटिटिवनेस काउन्सिल,** एनएमसीसी, नई दिल्ली. इन्फॉर्मल एक्सचेंज ऑफ नोट्स एंड थॉट प्रोसेस
18. **नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर ओपन स्कूलिंग,** एनआईओएस, नई दिल्ली. इन्फॉर्मल एक्सचेंज ऑफ नोट्स एंड थॉट प्रोसेस
19. **आइटी एंड कम्यूनिकेशन मंत्रालय,** नई दिल्ली, एचआरडी डिवीज़न, ई–इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड ई–लर्निंग – विशेषज्ञ समिति सदस्य
20. **परमर्शदात मंडल – एजुकेशन्स वर्ल्ड,** दि ह्यूमन डेवलपमेंट मैगजीन बंगलोर

इस पुस्तक में प्रयुक्त संक्षिप्तियां

GOI	Government of India
MOF	Ministry of Finance
RBI	Reserve Bank of India
WB	World Bank
FDI	Foreign Direct Investment
SSI	Small Scale Industry
SME	Small Medium Enterprise
NGO	Non-Government Organization
NRI	Non Resident Indian
NRC	Non Resident Chinese
PIO	Person of Indian Origin
Rs.	Indian rupees
LACS	Indian measure of value, 1 lac = 1,00,000
GDP	Gross Domestic Product
MHRD	Ministry of Human Resource Development
H&TE	Higher & Technical Education
VET	Vocational Education & Training
ESD	Enterprise Skills Education
P&SE	Primary & secondary education
SEZ	Special Economic Zone
VRS	Voluntary retirement scheme
SQ	Spiritual Quotient
EQ	Emotional Quotient
IQ	Intelligence Quotient
PPP	Purchasing Power Parity
MP	Member of Parliament
MLA	Member Legislative Assembly
CRORES	Indian measure of value, 1 crore 1,00,00,000
CII	Confederation of Indian Industries
FICCI	Federation of Indian Chambers of Commerce
IMC	Indian Merchant's Chamber
BCC&I	Maharashtra Economic Development Corporation
ASSOCHAM	Associated Chambers of Commerce
PHDCC&I	PHD Chamber of Commerce & Industry

i Watch प्रकाशन
13 भाषाओं में उपलब्ध

यह पुस्तक

भारत का कायाकल्प पुस्तक अंग्रेजी, हिन्दी, ऊर्दू, मराठी, गुजराती, बंगला, उड़िया, असमिया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु कन्नड और मलयालम में उपलब्ध है।

सिर्फ 7% भारतीय ही अंग्रेजी समझ पाते हैं, इसलिए भारत की समस्त प्रमुख भाषाओं में संवाद किया जाना जरूरी है। अत: सभी 13 भाषाओं में हमारे प्रकाशनों को उपलब्ध कराना बेहद जरूरी है।

भारत में इसकी एक प्रति का प्रशासनिक तथा डाक खर्च रु. 200 है। अन्य देशों हेतु विवरण के लिए अन्तिम आवरण पृष्ठ देखें। सभी भुगतान *i Watch* के पक्ष में चेक द्वारा अग्रिम रूप से किए जाने होंगे।

भारत देश के भीतर ही किसी भाषा के संस्करण के मुफ़्त वितरण हेतु न्यूनतम 1000 प्रतियों को छपवाने के लिए रु. 200,000 के दान की आवश्यकता होती है। अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ 97 देखें।

i Watch **की अन्य प्रकाशन**

i Watch द्वारा निम्नलिखित, नौ और महत्त्वपूर्ण प्रकाशन भी 13 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं, जिनमें उपरोक्त में से उल्लिखित 12 भारतीय भाषाएं शामिल हैं।

मुफ़्त नमूने हमारी साइट www.wakeupcall.org. से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

2 पृष्ठ वाले प्रकाशन भी हैं। वे हैं:

1. **भारत को एक ज्ञानमूलक अर्थव्यवस्था बनाना** ..... शिक्षा तथा मानव संसाधन विकास पर
2. **भारत–शायद आप ये न जानते हों** ..... अर्थव्यवस्था तथा रोजगार पर
3. **भारत के लिए एक सूत्रीय कार्यक्रम** ..... सुशासन पर
4. **शिक्षा की देवी सरस्वती को बंधन से आज़ाद तथा जंजीरों से मुक्त करना** ..... उच्च व तकनीकी शिक्षा
5. ***i Watch*... भारत का कायाकल्प** ..... *i Watch* की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण
6. **शिक्षा का महत्त्व** ..... शिक्षा व एचआरडी
7. **शिक्षा की मार्फत भारत का कायाकल्प** ..... उत्कृष्टता की ओर भारत की महत्त्वपूर्ण पहल
8. **भारत का विरोधामास** ..... शैक्षिक संस्थानों का दायित्व क्या है?
9. **संगत शिक्षा व प्रशिक्षण** ..... बिज़नेस व उद्योग की पहल क्या हो?

उपरोक्त दो नोट्स नौ पृष्ठीय हैं, जिन्हें 4–रंग योजना में हैवी 120 जीएमएस आर्ट पेपर में 8.5 x11 पर छापा गया है। प्रत्येक भाषा में कम से कम 4000 प्रतियां छपवायी गयी हैं।

भारत में मुफ़्त डिलीवरी के लिए प्रत्येक 2–पृष्ठ के सिंगल शीट वाली 4000 प्रतियों को प्रिन्ट करने तथा प्रशासनिक व्यय को वहन करने के लिए रु. 15,000 के दान की आवश्यकता होगी। तभी भारत में कहीं पर भी उपर्युक्त नौ प्रकाशनों में से किसी को भी नि:शुल्क वितरण किया जा सकेगा।

जो व्यक्ति तथा संगठत धारा 80जी के अनुसार आयकर लाभ पाना चाहते हैं, वे स्थानीय चेक तथा मुंबई में देय डिमाण्ड ड्राफ्ट
i Watch, के नाम से निम्नलिखित पते पर भिजवाएं।

i Watch
211, ऑलिम्पस
अल्टामाउण्ट रोड,
मुंबई 400 026/भारत.

For payment by NEFT/RTGS
i Watch, account No. 006610110001300
Bank of India, Altamont Road Branch, Mumbai-400 026.
IFSC Code: BKID0000066

10% से 15% प्रति वर्ष की जीडीपी बढ़ोतरी–दर के लिए कार्य योजना

	अर्थव्यवस्था के भीतर विभिन्न क्षेत्रों में सुझाई गई प्राथमिकताएं	**%**
1	शासन तथा प्रशासन	10%
2	संगत शिक्षण तथा प्रशिक्षण–प्राथमिक व सेकेन्ड्री शिक्षा	10%
3	उत्पादन–एसएमई के विशेष संदर्भ में (एसएमई, जीडीपी का 80% हैं। एसएसआई जीडीपी का केवल 7% है)	20%
4	यात्रा एवं पर्यटन–एक उद्यम के रूप में	10%
5	स्वास्थ्य देखरेख–एक उद्यम के रूप में	10%
6	शिक्षण तथा प्रशिक्षण–एक उद्यम के रूप में–व्यवसायिक तथा उच्च/तकनीकी/मेडिकल शिक्षा	10%
7	साफ्टवेयर तथा आई.टी.–एक उद्यम के रूप में	10%
8	कृषि–तथा ग्रामीण भारत में कृषि आधारित उद्यम	20%
9	2, 3, 4, 5, 6, 7 तथा 8 की मदों का निर्यात–**आधिकतम ! आधिकतम ! आधिकतम !** करना।	↑

भारत की जीडीपी प्रति वर्ष लगभग 1,843 बिलियन अमरीकी डॉलर है। आई.टी. सॉफ्टवेयर भारत की जीडीपी का लगभग 5.0% होगा।

इसलिए आई.टी. और सॉफ्टवेयर ही सब कुछ नहीं है।

हमें शेष 95% आर्थिक गतिविधियों के महत्त्व पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं: केवल छ: अन्य क्षेत्रों पर **विचार किया गया है...**

1. **थोक तथा खुदरा प्रतिवर्ष** 17,000 बिलियन अमरीकी डॉलर का कारोबार दुनिया भर में है। आई.टी. का 14 गुना।

2. **उत्पादन** दुनिया भर में प्रति वर्ष इसका कारोबार 15,000 बिलियन अमरीकी डॉलर का है, जो आई.टी. से 12 गुना ज़्यादा है।

3. **यात्रा एवं पर्यटन** दुनिया भर में प्रति वर्ष 10,000 बिलियन अमरीकी डॉलर का है, जो आई.टी. से 6 गुना ज़्यादा है।

4. **स्वास्थ्य देखरेख** दुनिया भर में प्रति वर्ष इसका कारोबार 8700 बिलियन अमरीकी डॉलर का है, जो आई.टी. से 4 गुना है।

5. **शिक्षा** दुनिया भर में प्रति वर्ष इसका कारोबार 9000 बिलियन अमरीकी डॉलर का है, जो आई.टी. से 4 गुना है।

6. **उत्पादन व्यवसाय** दुनिया भर में प्रतिवर्ष 8000 बिलियन अमरीकी डॉलर है, जो कि आई.टी. का 5 गुना है।

आई.टी. विश्व जीडीपी का 2.0% से 2.5% है। भारत में हम आई.टी को इतना महत्व क्यों दे रहे हैं?

इसी वजह से अन्य क्षेत्रों में भारत की जीडीपी वृद्धि तथा रोजगार सृजन की संभावनाओं से हम हाथ धो बैठे हैं। केवल उत्पादन से लगभग 70% सरकारी राजस्व की प्राप्ति होती है!

<1 बिलियन = 1000 मिलियन> <1 मिलियन = 10 लाख> <1 करोड़ = 100 लाख = 10 मिलियन> <1 यूएस$ = रु. 60 (लगभग)>

i Watch की सन 2014–2015 की परियोजनाएँ

परियोजना #1

जागरूकता जगाना

12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशन

हमारी 104 पृष्ठोंवाली इस पुस्तक की 1000 प्रतियाँ छापने के लिए प्रत्येक भाषा के लिए रु. 2 लाख का खर्च आता है। (इसमें भाषा में प्रकाशन का अनुवाद का खर्च, आर्ट वर्क, कागज और छपाई का खर्च भी शामिल है। प्रायोजक को अपने बारे में लिखने के लिए 2 पृष्ठ मिलेंगे।

इस पुस्तक में निम्नलिखित विषय–क्षेत्रों पर 47 लेख हैं:

1. **रोजगार की उत्पत्ति**
2. **शिक्षा व मानव संसाधन विकास (एचआरडी)**
3. **अर्थशास्त्र व उद्यम**
4. **प्रशासन**

परियोजना #1 को लागू करने का प्रभाव

केवल 6% से 7% भारतीय जनता अंग्रेजी समझती है।

यदि हमें सभी भारतीयों तक पहुंचना है, तो हमें सबसे पहले निचले व मजदूरकश 93% जनता से संवाद स्थापित करना होगा। **केवल क्रीमी लेयर वाली 7% जनता** से विचार–विमर्श करने से काम नहीं चलने वाला।

तभी हम *हिंदी, उर्दु, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, गुजराती, मराठी, असमिया, उड़िया, बंगाली और पंजाबी 12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित* अनुवादित पुस्तकों की मार्फत **सिविल समाज की 93% बहुमत जनता से संवाद स्थापित करने की अवस्था** में आ सकेंगे।

हमने देखा है कि हमारे द्वारा दी गई हर पुस्तक अन्य 10 लोगों के हाथों में हाथों –हाथ चली और पढ़ी जाती है। वे अकसर संदर्भ ग्रंथ के रूप में भी उसका सदुपयोग करते हैं।

परियोजना #2

सोचने का तरीका बदलने के साथ–साथ समाधान भी देना

हमारी योजना सभी स्कूलों और कॉलेजों के टीचरों तक पहुंचने की है। सभी सार्वजनिक पुस्तकालयों, लोकल व क्षेत्रीय मीडिया, 37,000 कॉलेजों और सारे भारत में स्थित 225,000 उच्चतर सेकंडरी स्कूलों तक प्रवेश करने की है।

हमारी योजना हमारे प्रकाशनों को संदर्भ और मार्गदर्शक सामग्री के रूप में प्रयोग करते हुए भारत के सभी स्कूलों व कॉलेजों में परस्पर संवाद वाली कार्यशालाओं के आयोजन करने की है।

भारत में 17,00,000 प्राइमरी स्कूल हैं। 225,000 उच्चतर सेकंडरी स्कूल हैं। 37,000 कॉलेज हैं। हम इन स्थानों पर युवा पीढ़ी से संपर्क करना चाहते हैं। टीचरों से संवाद करके प्रति स्कूल/कॉलेज 10 से 100 पुस्तक देना चाहते हैं।

परियोजना #2 लागू होने पर मिलने वाले परिणाम

1. **मानव संसाधन विकास** का महत्त्व अर्थात प्राइमरी व सेकंडरी स्कूली शिक्षा सभी को दिलाना।
2. रोजगार उत्पत्ति के लिए **व्यावसायिक शिक्षा व प्रशिक्षण** सभी को मिले।
3. **उच्चतर, मेडिकल और तकनीकी शिक्षा** को पाबंदियों से मुफ्त करके पूरी तरह आसान बनाने की आवश्यकता है।
4. सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यमों को यानी **एमएसएमई** को महत्त्व दिया जाए।
5. **निर्यात** में गुणवत्ता, लागत और प्रतिस्पर्धिता को बनाया जाए।
6. **सुशासन** पर जोर दिया और उसे सक्षम बना कर भ्रष्टाचार को खत्म किया जाए। सामान्य भारतीय नागरिक की जीवन–शैली को उच्च बनाया जाए।

हमारे भारत देश में करीब 41 मिलियन बेरोजगार लोग हैं, जिनके नाम रोजगार कार्यालय में पंजीकृत हैं। **उनमें से अधिकांश अकुशल लोग हैं, जिससे वे रोजगार के काबिल ही नहीं है। इस समय किंडरगार्टन से 10+2 कक्षाओं तक पढ़ाई छोड़ कर जाने वालों की संख्या लगभग 88% से 92% है।**

हमारी केन्द्र और राज्य सरकारों पर ऐसी कोई भी योजना नहीं है कि कैसे इस 90% बेरोजगार मानव पूंजी को लाभदायक तौर पर रोजगार देकर उनका सदुपयोग राष्ट्र के निर्माण–कार्य मे किया जाए।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उच्च प्रतिशत अंक लाने की अनिवार्यता से बेरोजगारी की यह स्थिति और भी विकट बनती जा रही है।

कक्षा 5वीं और 6वीं तथ 10, 11 और 12वीं कक्षा तक प्रयोजन–मूलक साक्षरता ज्ञान रखने वाली विशाल यूवा मानव पूंजी को बड़ी अच्छी तरह लाभदायक कुशलता प्राप्त मानव शक्ति में बदला जा सकता है। उसके लिए 500,000 व्यावसायिक संस्थानों की आवश्यकता है। चीन में 3000 व्यवसायों में प्रति वर्ष 80 मिलियन लोगों को प्रशिक्षित किया जाता है।

एक औसत भारतीय की उम्र **26** वर्ष की है। यदि हमारे देश को इस बढ़ी हुई **जनसंख्या का लाभांश** प्राप्त करना है, तो जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी हमारे युवा को ''कुशलता प्राप्त'' बनाना होगा।

अकसर देशों में **70% से 96% श्रमशक्ति 'कुशलता ज्ञान' से लैस हैं**। जब कि भारत देश में, कुछेक बेहतर राज्यों में मुश्किल से 2% से 5% लोगों यह ज्ञान प्राप्त बनाने का अनुमान मिलता है। यदि भारत देश को ग्लोबल रूप से कुशलता–ज्ञान से सुसज्जित करना है, तो **कार्यशक्ति की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए उनकी कौशल गुणवत्ता को बढ़ना ही होगा।**

अगर एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों से भी तुलना की जाए, तो हमारी वर्तमान श्रम उत्पादकता बहुत ही निम्न कोटि की है। जब कि हमारे देश में मजदूरी और वेतन हमारी वास्तविक मुद्रास्फीति की तुलना में कई गुना बढ़ती जा रही है।

यह एक खतरनाक रवैया है, जो भारत को निवेश की दृष्टि से वह चाहे घरेलू हो या विदेशी बिज़नेस में हो, एक दयनीय मंजिल की ओर ले जा सकता है।

भारत केवल उसकी क्रयशक्ति समानता (पीपीपी) का ही फायदा उठा सकता है, अगर वह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय में बाज़ारों में उच्च कौशल प्राप्त जनशक्ति हर गुणवत्ता क्षेत्र में पैदा करे। जो विद्यार्थी 10+2 परीक्षा पास कर लेते हैं, उनमें से लगभग 98% अकसर बी.ए. के लिए कॉलेज चुनते हैं, 71% बीएससी करते हैं, जबकि 18% बी.कॉम.।

हमारे पास तथाकथित **''शिक्षित बेरोजगार''** हैं, जिनको **रोजगार में लाया ही नहीं** जा सकता।

हमारे प्रकाशन इस तरह तैयार किये गये हैं कि युवाओं, सिविल समाज और टीचरों के साथ–साथ उन नियोक्ताओं की भी विचारधारा बदल दें, जो कि प्राप्तांक अंक सूची की बजाय कौशल ज्ञान को महत्त्व ज्यादा देते हैं।

i Watch

211, ऑलिम्पस, अल्टामाउन्ट रोड, मुंबई 400026।
टेली: +91 22 2353 5466 फैक्स: +91 22 2353 6782
ई–मेल: krishan@wakeupcall.org वेबसाइट: www.wakeupcall.org

देशी व विदेशी स्रोतों से दान स्वीकार किए जाते है। चेक केवल i Watch के नाम काटे जाने चाहिए तथा उपरोक्त पते पर भिजवाए जाने चाहिए।

Sundaram®
Education Revolution

Eclass™
Secret to success

डिजिटल स्कूली शिक्षा रु. 100 प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष पर या US$ 2 प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष पर

- ***ई–क्लास*** पेन ड्राइव में उपलब्ध, अध्याय अनुसार, ऑडियो–विज्युअल एनिमेटेड पाठ्य सामग्री है, जिसे एक छोटे मल्टी मीडिया प्लेयर ***ईबॉक्स*** के जरिए टीवी पर चलाया जा सकता है।
- यह महाराष्ट्र राज्य बोर्ड की पहली से दसवीं तक की अंग्रेजी, मराठी और अर्द्ध अंग्रेजी माध्यम के सभी विषयों की पढ़ाई के लिए एक नयी–अनूठी सामग्री है।
- ***ई–क्लास*** में प्रत्येक विषय पर वर्च्युअल कक्षा में एक वास्तविक अध्यापक उपलब्ध होता है जो कि हर अध्याय को रोचक ढंग से पढ़ाता है जिससे पढ़ाई फिल्म देखने जैसा सुखद अनुभव देती है। यहां प्रश्न–उत्तर पुनरावृत्ति के लिए माइंड मैप जैसी विशेषताएं भी हैं।
- ***ई–क्लास*** को आसानी से पीसी, लैपटॉप, स्कूल सर्वर आदि पर भी लोड किया जा सकता है।
- ***ई–क्लास*** एक अनूठी पाठ्य सामग्री है जो कि सबके लिए उपयोगी है चाहे आप विद्यार्थी हों, अभिभावक हों, अध्यापक, स्कूल, कोचिंग इंस्टिट्यूट, कॉर्पोरेट, एनजीओ या फिर भारत के ग्रामीण या अर्धशहरी इलाके के शिक्षित युवा हों।

ई–क्लास के फायदे

- ***ई–क्लास*** विद्यार्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद है क्योंकि वे विषय को सिर्फ रट्टा लगाने के बजाए एक बहुत ही अलग तथा सीखने की पद्धति पर आधारित तरीके से सीख कर क्षमता हासिल कर सकते हैं।
- ***ई–क्लास*** अध्यापकों के उपलब्ध न होने की बढ़ती समस्या को दूर करने में भी काफी उपयोगी है। साथ ही यह उपयोगी एनिमेशन युक्त विज्युअल्स उपलब्ध कराते हुए अध्यापकों को मुश्किल विषयों को आसानी से समझाने में मदद करता है जिससे विद्यार्थी उन्हें सरलता से समझ सकते हैं।
- ***ई–क्लास*** शिक्षा को सरल, आसान, आनन्ददायक और पूर्णत: तनावरहित प्रक्रिया बनाता है जिससे विद्यार्थियों की सफलता दर में वृद्धि होती है और पढ़ाई को बीच में छोड़े बिना आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है।

ई–क्लास की विचारधारा
सभी को एक समान शिक्षा प्राप्त हो

परिवर्तन को दिशा प्रदान कीजिए, हमें यहां कॉल करें 022–61163030
या यहां लॉग ऑन करें www.e-class.in, www.eclassonline.in

Sundaram®
Education Revolution

Eclass™
Secret to success

टीवी

ई–क्लास पेन ड्राइव को ई–बॉक्स से जोड़कर पाठ्य सामग्री को टीवी पर सीधे देखा जा सकता है।

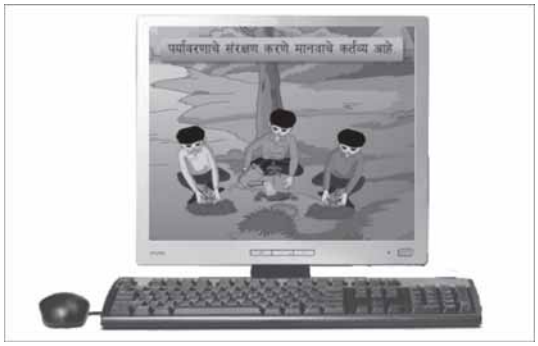

कम्प्यूटर और लैपटॉप

पाठ्यसामग्री को देखने के लिए *ई–क्लास पेन ड्राइव को कम्प्यूटर से सीधे जोड़ा जाता है।*

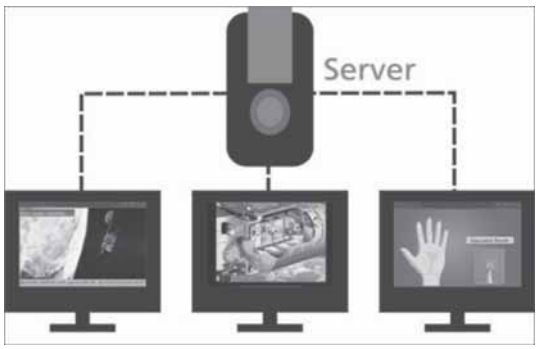

सर्वर सिस्टम

ई–क्लास को स्क्रीन सिस्टम या लैन सिस्टम के जरिए स्कूलों में इंस्टॉल किया जा सकता है. *ई–क्लास* को कम्प्यूटर लैब्स में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

प्रोजेक्टर–स्क्रीन

ई–क्लास को सीधे *ई–बॉक्स* के जरिए प्रोजेक्टर पर भी देखा जा सकता है।

ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल : www.eclassonline.in

- हमारी वेबसाइट पर लॉग ऑन करें और अपनी सुविधा तथा समय के अनुसार ऑनलाइन सीखें।
- आपकी ज़रुरतों के अनुसार आकर्षक पैकेजेज़।
- रजिस्ट्रेशन पर सभी स्टैण्डर्ड्स के लिए मुफ़्त डेमो पैकेजेज़।
- सोशियल नेटवर्किंग और शैक्षणिक सामग्री।
- अपने मित्रों को जोड़ें, प्रोजेक्ट्स की साझेदारी करें, टेलेन्ट जोन, mcq, लेख तथा और भी बहुत कुछ।
- नेक्स्ट जेनरेशन ई–लर्निंग पोर्टल नोट्स तथा माइंड मैप एवं और भी बहुत सारी विशेषताओं के साथ।
- ई–क्लास ऑनलाइन – ऑनलाइन शिक्षा के जरिए राष्ट्र का सशक्तीकरण

परिवर्तन को दिशा प्रदान कीजिए, हमें यहां कॉल करें 022–61163030
या यहां लॉग ऑन करें www.e-class.in, www.eclassonline.in

i Watch की ओर से **सीएसआर परियोजनाएं**

1. परियोजना 1 और 2:... युवाओं और बेरोज़गारों की सोच को बदलना और उनके सामने समाधान पेश करना। हमारी 108 पृष्ठों की पुस्तक का जनता में वितरण करना। परियोजना **#** 1 और 2 पर अमल करने का प्रभाव।

- ***मानव संसाधन विकास का महत्त्व*** *अर्थात सभी के लिए प्राइमरी–पूर्व, प्राइमरी तथा सेकेण्ड्री शिक्षा*
- *रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए* ***व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण*** *का महत्त्व*
- *उच्च चिकित्सा तथा तकनीकी शिक्षा से* ***पूरी तरह नियंत्रण हटाने की जरूरत***
- ***एमएसएमई'ज़*** *या सूक्ष्म छोटे मझोले उद्यमों का महत्त्व*
- ***गुणवत्ता, लागत और प्रतिस्पर्धिता के लिए निर्यात*** *का महत्त्व*
- *भारत की आम जनता के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने और भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए* ***सुशासन*** *का महत्त्व और आवश्यकता*
- *अधिक जानकारी के लिए, हमारी पुस्तक भारत का कायाकल्प पृष्ठ 97 देखें*

2. बेरोजगारों के लिए **रोजगार उत्पत्ति**

सेवाओं, उत्पादन तथा खेती के क्षेत्रों रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए हम आपके ब्लॉक/जिले/राज्य में व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने में सहयोग और मार्गदर्शन दे सकते हैं। इसके लिए हमने स्थानीय प्रशिक्षण कंपनियों तथा जर्मनी और स्विस स्किल बिल्डिंग ऑर्गेनाइजेशन के साथ गठबंधन किया है। ये अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम भारतीय इस्तेमालकर्ताओं के लिए उपलब्ध कराए जा सकते हैं।

3. डिजिटल स्कूली शिक्षा रु. 100 प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष पर या US$ 2 प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष पर

ई–क्लास एज्युकेशन सिस्टम लि. के पास एक कम लागत वाली हाई–टेक टेक्नोलॉजी **ई–क्लास** है, जिसके अंतर्गत स्कूलों को करीब **रु. 100 प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष** की लागत पर शामिल किया जा सकता है। **यहां किसी कम्प्यूटर और इंटरनेट की ज़रूरत नहीं पड़ती है, केवल टीवी** का होना पर्याप्त है पाठ्यक्रम कक्षा 1 से 10 के लिए राज्य शिक्षा बोर्ड के अनुसार है।

4. कक्षा 9, 10, 11 व 12 के लिए भौतिकी–रसायन–गणित में **इंटरनेट आधारित हायर सेकेण्ड्री शिक्षा** विज्ञान की शिक्षा। 11 भारतीय भाषाओं में ई–कान्टेन्ट के समर्थन तथा किसी भी विषय के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। **ई–टीचर** प्लेटफॉर्म **डायनामाइंड** का इस्तेमाल करते हुए विश्वस्तरीय मापदण्डों के साथ सबसे कम लागतवाली इंटरनेट आधारित टेक्नोलॉजी। वर्तमान लागत **करीब रु. 2 प्रति घंटा** प्रति विद्यार्थी या करीब **1 अमरीकी डॉलर प्रति विद्यार्थी** है। उड़ीसा राज्य शिक्षा विभाग द्वारा इसे अपनाया जा चुका है। अन्य सभी राज्यों द्वारा अपनाया एवं अपेक्षित रूप में ढाला जा सकता है। इसमें ऑन–लाइन इंटरएक्टिव कोचिंग, आकलन, प्रतिसाद (फीडबैक), प्रश्न–उत्तर तथा प्रति विद्यार्थी आधार पर मेन्टरिंग शामिल है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स और क्लाउड कम्प्यूटिंग का इस्तेमाल किया जाता है।

5. व्यक्तियों, स्कूलों तथा कॉलेजों के लिए **उद्यमशीलता कौशल विकास, ईएसडी** या उद्यमशीलता में कोचिंग *(मुफ़्त पेशकश)*

आप चाहे स्व: नियोजित हों या दूसरों के लिए कार्य करते हों यह गुण बहुत महत्त्वपूर्ण है। **लगभग 58% भारतीय स्व:नियोजित हैं।** कोई भी व्यक्ति, स्कूल या कॉलेज http://www.enterprise-education.in पर विजिट करके मुफ़्त कोचिंग पा सकता है या अधिक जानकारी के लिए आप www.deispune.org पर विजिट कर सकते हैं।

6. ग्रामीण और शहरी भारत के लिए **1 पैसा** प्रति लीटर पर **सामुदायिक आधार पर सुरक्षित पेय जल, खाना पकाने, नहाने और तैरने हेतु जल.** साफ–सफाई तथा कीटाणुनाशन के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

सबसे सस्ती ग्रीन टेक्नोलॉजी जिसमें सहायक सामग्रियों के रूप में केवल खाने के नमक और बिजली का इस्तेमाल किया जाता है। 1 मिलियन लीटर सुरक्षित पानी के लिए केवल 10 किलोवॉट बिजली और पांच किलो नमक की ज़रूरत पड़ती है। **सोलर ऊर्जा से चलने वाली यूनिट्स भी उपलब्ध हैं,** क्योंकि हमारे देश के कई हिस्सों में आज भी भरोसेमंद बिजली उपलब्ध नहीं है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक 1100 से अधिक संस्थापन कार्यरत हैं। **80% बीमारियां पानी में पनपती है।** बोतलबंद पानी में इससे 2000 गुना ज़्यादा खर्च आता है। **भारत के 100 करोड़ लोग असुरक्षित पानी से काम चलाते हैं।**

7. वर्षा जल संग्रहण क्यों किया जाना चाहिए

भारत में अधिकतम जल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से प्राप्त होने वाला वर्षा जल होता है. बरसात का मौसम एक निश्चित अवधि के लिए होता है, साल में करीब 100 दिन। 35 दिनों में 50% पानी बरसता है और शेष 65 दिनों में। इसीलिए वर्षा जल का संग्रहण बहुत जरूरी है। यह एक छोटी टेक्नोलॉजी वाला समाधान है, जिसे भारत की सभी 9000 नगरपालिकाओं और 630000 गांवों द्वारा अपनाया जाना चाहिए। फिलहाल हम अपने भूमिगत जल संसाधनों को खत्म करते जा रहे हैं। **वर्षा के इन 100 दिनों की अवधि में हमें उन्हें वर्षा जल संग्रहण के द्वारा भरना चाहिए।**

8. अनुपयोगी जल की रीसायक्लिंग के लिए बायो–टेक्नोलॉजी

अनुपयोगी जल की रिसायक्लिंग एक बिल्कुल व्यावहारिक कदम है अगर इसे विकेन्द्रित तरीके से किया जाता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में स्रोत और इस्तेमालकर्ता एक दूसरे के नज़दीक होंगे। अनुपयोगी जल को शुद्धिकरण के लिए किसी दूर–दराज में स्थित यूनिट तक ले जाना और इस्तेमालकर्ता तक वापस पहुंचाना एक महंगा काम है, क्योंकि उसके लिए पाइपलाइन्स, पम्प्स बिजली और रखरखाव की ज़रुरत होगी। पानी को रीसायकिल करने का मौजूदा तरीका अपेक्षित परिणाम नहीं दे रहा है। इसके अलावा ऑर्गेनिक अनुपयोगी पदार्थ का इनऑर्गेनिक तरीके से उपचार करने पर कचरे में मौजूद ऑर्गेनिक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है इसलिए अनुपयोगी पदार्थ की रीसायक्लिंग के लिए बायो–टेक्नोलॉजी को अपनाना महत्त्वपूर्ण है, ताकि ऑर्गेनिक पदार्थ वापस वहां पहुंच सकें, जहां से वे उत्पन्न हुए थे। केवल इसी तरीके से पानी की कमी की गंभीर समस्या का व्यावहारिक समाधान पाया जा सकता है।

समुदायों के लिए **सुरक्षित पेय जल, खाना पकाने, नहाने और तैराकी का पानी तथा साफ–सफाई**

डी नोरा इलेक्ट्रो क्लोरीनेशन ''ग्रीन टेक्नोलॉजीज़'' के इस्तेमाल के जरिए, जिसका खर्च प्रति लीटर पानी के लिए करीब 0.10 से 1.00 पैसा आता है

1. उपचार से बेहतर है बचाव

2. भारत में करीब 100 करोड़ लोग असुरक्षित पानी पीने को मजबूर हैं।

3. 80% बीमारियां पानी के कारण पैदा होती हैं।

4. डी नोरा ''**ग्रीन टेक्नोलॉजी**'' का इस्तेमाल पानी से बैक्टेरिया और वायरसों को मिटाने के लिए किया जाता है जो कि पानी से पैदा होने वाली विभिन्न बीमारियों के कारण होते हैं। यह टेक्नोलॉजी **इलेक्ट्रो क्लोरीनेशन** है।

5. पानी के कारण पैदा होने वाली आम बीमारियां हैं हैजा, टाइफॉयड, पेचिस, दस्त (डायरिया), पीलिया, हेपाटाइटिस, कृमियां इत्यादि।

6. डी नोरा ''**ग्रीन टेक्नोलॉजी**'' द्वारा केवल बिजली और खाने के नमक का इस्तेमाल करके सोडियम हायपो क्लोराइट बनाया जाता है जिसमें ''एक्टिव'' क्लोरीन 8000 पार्ट्स प्रति मिलियन या पीपीएम तक होते हैं।

7. सोडियम हायपो क्लोराइट सॉल्यूशन में इस एक्टिव क्लोरीन का इस्तेमाल पानी के कीटाणुनाशक तथा साफ–सफाई के लिए किया जाता है। ब्रोशर्स देखें।

पानी के दूषित होने के कारण हैजा, टाइफॉयड और पेचिश जैसी बीमारियों के बढ़ते खतरों को देखते हुए स्थानीय जल उपचार प्लांट्स द्वारा कई वर्ष पहले से अपनी टेक्नोलॉजी में सुधार किया जाने लगा और इन खतरों से निपटने के लिए जल उपचार प्लांट्स क्लोरीनेशन की प्रक्रिया को अपनाने लगे। क्लोरीनेशन ने इन बीमारियों को पनपने और फैलने दोनों से ही रोका, और इस कारण इसे लाइफ़ मैगजीन ने ''सौ सालों में सबसे महत्त्वपूर्ण जन स्वास्थ्य संबंधी कदम घोषित किया।

इलेक्ट्रो क्लोरीनेशन इस प्रक्रिया में प्रगति की ओर अगल कदम है इलेक्ट्रो क्लोरीनेशन। इलेक्ट्रो क्लोरीनेशन पीने के पानी को पर्यावरण शुभचिन्तक तरीके से क्लोरीनेट्स करता है। यह प्रक्रिया पर्यावरण को किसी प्रकार से हानि नहीं पहुंचाती है। अन्य क्लोरीनेशन तकनीकों के विपरीत, इलेक्ट्रो क्लोरीनेशन से किसी कीचड़ या बाई–प्रोडक्ट्स की उत्पत्ति नहीं होती है। साथ ही यह क्लोरीनेटर्स के प्रचालकों के लिए भी सुरक्षित है क्योंकि उन्हें क्लोरीन गैस को हैंडल नहीं करना पड़ता, जो कि काफी जहरीली और संक्षारक होती है।

समुदायों तथा साफ–सफाई के लिए पेय जल, खाना पकाने , नहाने और तैराकी के पानी के लिए ब्रोशर्स संलग्न हैं। सीक्लोर मैंक एंड टिटानोर–डी नोरा स्पा, मिलान, इटली तथा डी नोरा इंडिया लि., गोवा, भारत के रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क्स हैं।

अगर रुचि हो तो कृष्ण खन्ना से krishan@vsnl.com या +919821140756 पर सम्पर्क करें।

कृष्ण खन्ना
Founder & Trustee
of *i Watch*

लेखक परिचय

i Watch के संस्थापक कृष्ण खन्ना आईआईटी खड़गपुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग के स्नातक हैं।

इन्हें सन 1996 में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा नेशनल सिटीजन्स सम्मान से विभूषित किया गया था। सन 2007 में इन्हें फ्रैंड्स ऑफ़ साउथ एशियन अमेरिकन कम्यूनिटी, एफओएसएएसी, लॉस एंजेल्स, यूएसए द्वारा उत्कृष्ट सक्रिय नेतृत्व के लिए राजीव गांधी पुरस्कार प्रदान किया गया. सन 2011 में उन्हें ताजमहल होटल, मुंबई, भारत में एक सीएसआर समारोह में नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. मोहम्मद युनूस द्वारा 'सोशियल पायनियर पुरस्कार' से सम्मानित किया गया. शिक्षा क्षेत्र की एक अग्रणी मासिक पत्रिका एज्युकेशन वर्ल्ड ने अपने जून 2012 के अंक में भारतीय शिक्षा जगत में परिवर्तन लानेवाले **50 लीडर्स** में इन्हें शामिल किया है।

कृष्ण खन्ना ने एक टेक्नोक्रैट के रूप में 48 वर्षों के अपने कार्यजीवन के लगभग 6 वर्ष जर्मनी और जापान में बिताए हैं। इन्होंने व्यवसाय, प्रबंधन तथा सामाजिक क्षेत्रों में कार्य किया है।

इन्होंने पांचों महाद्वीपों की व्यापक रूप से यात्रा की है तथा अमेरिका, कनाडा, ब्राजील, यूके, स्वीडन, जर्मनी, इटली, ईरान, चीन, कोरिया, तायवान, सिंगापुर, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत के संगठनों के साथ पंद्रह संयुक्त उद्यमों और व्यावसायिक भागीदारियों में शामिल हुए हैं।

सन 1992 में इन्होंने कॉर्पोरेट जगत, प्रोफेशनल और व्यावसायिक कैरियर को तिलांजलि देकर **भारत के कायाकल्प** और राष्ट्र निर्माण का बीड़ा उठाया और स्वयं को इस क्षेत्र हेतु समर्पित किया।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इन्होंने *i Watch* नामक एक अलाभकारी फाउन्डेशन की स्थापना की। जिसका कामकाज 1992–1993 में मुंबई, भारत स्थित उनके प्राइवेट ऑफ़िस से आरंभ हुआ। *i Watch* का मुख्य ध्यानाकर्षण **शासन** और **शिक्षा** तथा **अर्थव्यवस्था** व रोज़गार पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव पर है।

इस कार्य का ध्येय भारत की जनता के समक्ष देश की वर्तमान स्थितियों व तथ्यों को रखते हुए उनके सामने कुछ आजमाए परखे तथा आसान समाधना प्रस्तुत करना है ताकि विश्व में हमारे देश को उसके सही स्थान पर स्थापित किया जा सके। भारत की छिपी क्षमताओं को रेखांकित करते हुए इसकी मानव शक्ति के मूल्य की ओर ध्यान आकर्षित करना है, जो कि शक्ति सम्पन्न होने पर देय का कायाकल्प कर सकते हैं।

अमृत पी. शाह
सीएमडी,
सुंदरम मल्टि कैप लि.

हमारा दृष्टिकोण

सुंदरम मल्टी पेप लि. एक सुख्यात पेपर स्टेशनरी ब्राण्ड है, जो सिविल समुदायों और विद्यार्थियों में अपनी उत्तमता के लिए ख्यात है! श्री. अमृत शाह इसके प्रमोटर, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निर्देशक हैं। उनकी अटूठ आस्था है कि ''किसी भी राष्ट्र की शक्ति के लिए शिक्षा एक मूलभूत कारक तत्व है। सुंदरम् शिक्षा सम्बन्धी सभी कार्यों के विकास व प्रसार में सदा–सर्वदा एक सहायक की भूमिका अदा करेगी। वे हमेशा से युवाओं, विद्यार्थी जगत तथा सिविल समाज में शिक्षा के लाभों का प्रसार–प्रचार और तत्सम्बन्धी जागरुकता जगाने का कार्य करते चले आ रहे हैं।

राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय महत्ववाले आयोजनों में भी *i Watch* की उल्लेखनीय उपस्थिति

Global HR Forum, Seoul, South Korea

CII–CSR Annual Conference, Chennai, India

NGO Partnership, London, UK

PAN IIT Annual Conventions, Santa Clara, Tokyo, Singapore, Chicago, Chennai, Mumbai, Noida & New York.

Pravasi Bhartiya Divas, New Delhi, India

संदेश

सत्यमेव जयते

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
भारत के
भूतपूर्व राष्ट्रपति

मुझे यह जानकर अपूर्व हर्ष हुआ कि ''भारत का कायाकल्प'' का सुकार्य करने के लिए नागरिक आंदोलन की मार्फत *"i Watch"* ने बीड़ा उठाया है !

"i Watch" ने सुशासन, शिक्षा, अर्थ-व्यवस्था, उद्यमशीलता एवं रोजगार उत्पत्ति के जो विषय उठाये हैं, सचमुच वास्तविक समस्याएँ हैं, जिनसे हमारा देश आज दो-चार हो रहा है। तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष, विश्लेषण और उनके आधारों पर सुझायी गयी कार्यवाहियाँ नि:संदेह परिणामकारी होंगे और यदि देश के विभिन्न स्टेक होल्डरों द्वारा उन पर कार्रवाई की गई तो हमें चमत्कारिक परिवर्तन प्राप्त हो सकेंगे।

मिसाल के तौर पर ही लें। यह दस्तावेज स्पष्ट रुप से बताता है कि तकनीकी शिक्षा के लिए स्वयं भारत देश को एक अन्तरराष्ट्रीय केन्द्र बनाना ही समय की माँग है।

इस दस्तावेज में जीडीपी दर को 10% से 14% बढ़ाने के लिए कार्रवाई की योजना भी दी गई है !

भारत का कायाकल्प दस्तावेज पुस्तिका सामाजिक कायाकल्प में संलग्न संस्थान, कार्यक्रम प्रबंधन एजेंसियाँ, नये उद्यमशील व्यक्तिगण, शिक्षा की रुप-रेखा बनाने वाले जैसे सभी लोग पुस्तिका में दिये गये विश्लेषण और डाटा-आंकड़ों से भरपूर लाभ उठा सकते हैं।

सामाजिक सुपरिवर्तन कार्य मिशन में संलग्न श्री कृष्ण खन्ना और उनकी टीम की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

- अपने पर्चे के द्वारा आपने ज्ञान की जो अमूल्य बातें कही हैं, उनमें से कुछ का उपयोग मैं कॉर्पोरेट अभिशासन पर अपनी नीतियों की रचना करते समय करना चाहूंगा।
  एन.आर. नारायण मूर्ति, चेयरमैन तथा चीफ़ मेंटर, इंफोसिस
- मुझे *i Watch* जैसे किसी और एनजीओ की जानकारी नहीं है, जिसके पास भारत की कायाकल्प करने के इतने उच्च विचार हों।
  मेजर जनरल डी. एन. खुराना, डायरेक्टर जनरल, ऑल इंडिया मैनेजमेन्ट एसोसिएशन
- मैंने आपकी पुस्तिका 'भारत का कायाकल्प' को बड़ी रुचि के साथ पढ़ा है तथा इसमें आपके द्वारा किए गये उपयोगी अध्ययनों एवं दिए गये सुझावों से काफी प्रभावित हुआ हूं, जिसके लिए मैं आपको अपनी शुभकामनाएं देना चाहता हूं। निस्संदेह इसमें उठाए गये मुद्दे और की गई सिफारिशें अपना ठोस मूल्य रखती हैं।
  बी.एन. युगान्धार, सदस्य योजना आयोग
- आपके द्वारा किए गये सराहनीय कार्य के लिए कृपया मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपके कार्य की सफलता के लिए मैं शुभकामनाएं देते हुए पूरे विश्वास के साथ यह कहना चाहता हूं कि आपके प्रकाशन जन-जागरूकता का एक शिक्षाप्रद माहौल पैदा करेंगे तथा ऐसे मुद्दों की ओर ध्यान केन्द्रित करेंगे जिनकी ओर हमें बहुत ज़्यादा ध्यान देने की ज़रुरत है।
  एम. वी. राजसेखरन, योजना राज्यमंत्री, योजना आयोग
- हम 500 से अधिक एनजीओ के साथ विचार-विमर्श और व्यवहार करते हैं और इस आधार पर हम कहना चाहेंगे कि हमने *i Watch* को एक अनूठा तथा निराला एनजीओ पाया है।
  विनय सोमानी, मैनेजिंग ट्रस्टी, Karmayog.com
- इन्होंने भारत की उच्च एवं निरन्तर कायम रहने वाली वृद्धि के लिए एक ढांचा तैयार किया है! इसके लिए वे जागरूकता पैदा करना और नीति विषयक परिवर्तनों को प्रभावित करना चाहते हैं। यह सचमुच एक अनूठी रणनीति है, जिसके दूरगामी परिणाम होंगे।
  राजीव कुमार, चीफ इकॉनॉमिस्ट, सीआईआई
- **वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम** तथा **सीआईआई** द्वारा आयोजित ''भारत तथा विश्व 2025' परिदृश्य पर परस्पर प्रभावी वर्कशॉप में *i Watch* को एक विशेष पैनल के अंग के रूप में टिप्पणियों तथा सुझावों के लिए आमंत्रित किया गया है।
  कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडिया इंडस्ट्री
- एक शैक्षणिक और एचआरडी कंसल्टेन्ट होने के नाते मैं *i Watch* की इस अनूठी योजना में पूरी तरह से यकीन करता हूं कि भारत के 95% युवा वर्ग को व्यावसायिक शिक्षा के 3000 क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस बात में अद्भुत नवीनता है! अगर इस पर अमल किया जाता है तो भारत की बेरोज़गारी की समस्या को एक बड़ा समाधान मिल जाएगा।
  प्रो. ऋषिकुमार पाण्ड्या, अंतर्राष्ट्रीय मैनेजमेन्ट गुरु.

इस पुस्तक की प्रति कॉपी प्रशासनिक तथा कूरियर लागत खर्च भारत, यूएसए, यूके, ईयू तथा जापान में इस प्रकार है

भारत रु. 200 • यूएसए $ 10 • यूके £10 • ईयू यूरो 10 • जापान ¥ 1000

भुगतान यहां करें : *i Watch*, ओलिम्पस, अल्टामाउन्ट रोड, मुंबई-400026, भारत.

अप्रैल-2014 संस्करण